अनमोल नसीहते

1. इल्म, ईमान और अमल का रहनुमा है।
2. और जो लोग हमारे रास्ते में दुख सहन करते है, हम उन्हें अपना रास्ता जरूर दिखा देगें। बेशक अल्लाह नेकी करने वालो का साथी है। (कुरआन्–29:69)
3. अल्लाह को किसी की जरूरत नहीं और तुम मोहताज हो और अगर तुम मुँह फेरने वाले हो जाओ तो वह तुम्हारे बदले दूसरे लोगों को लायेगा जो फिर तुम जैसे न होगें (कुरआन्–47:38)
4. मंजिल पर वही पहुँचता है जिसको सच्चाई की तलाश हो, वो कुरआन्, सहीह हदीस, साहाबा का रास्ता है।
5. इल्म बेफायदा होगा अगर अमल न हो और अमल बेफायदा होगा अगर इख्लास (सच्ची निष्ठा) से अल्लाह के लिये न किया गया हो।
6. आलिम बनो अगर आलिम नहीं बन सकते तो स्टूडेन्ट बनो अगर वो भी नहीं बन सकते तो सुनने वाले बनो नहीं तो इसके आगे कोई दर्जा इल्म का नहीं।
7. फितनो के दौर में उलेमाए हक़ और उलेमाए–सू की पहचान जरूरी है।

Almaktabatul Aliya, Bhopal
Mob.: 9039497175

व कुल जाअल हक्कु व ज़हकल बातिल
इन्नल बातिला काना ज़हूका (कुरआन–81:17)
अनुवादः और ऐलान कर दो कि सत्य आ गया और असत्य मिट गया बेशक असत्य था ही मिटने योग्य

सच्चाई की कसौटी

- प्रकृति एवं प्राकृतिक वस्तुओं में फर्क
- अल्लाह का आस्तिव
- पुर्नजन्म की हकीकत

लेखक
डॉ. मुहम्मद फारूक़
MBBS, MS (Ortho.)
मक्का मुकर्रमा (सउदी अरब)

नज़रे सानी
शेख उज़ैर शम्स
फजीलत (Hadith) उम्मुल कुर्रा यूनिवर्सिटी
मक्का मुकर्रमा (सउदी अरब)

towardsmukti.blogspot.com hindi-blog

सच्चाई की कसौटी

लेखक
डॉ. मुहम्मद फारूक़
MBBS, MS (Ortho.)
मक्का मुकर्रमा (सउदी अरब)

नज़रे सानी
शेख उज़ैर शम्स
Phd (Hadith) उम्मुल कुरा यूनिवर्सिटी
मक्का मुकर्रमा (सउदी अरब)

अल मकतबुलआलिया, भोपाल
मो. 9584675664

किताब का नाम — सच्चाई की कसौटी
लेखक का नाम — डॉ. मुहम्मद फारुक़
प्रतियां — 1000
मुद्रक — जेनन ऑफसेट,
एम.पी.नगर, जोन– ।।, भोपाल
संपादक — डॉ. मुहम्मद फारूक, भोपाल
वर्तमान पताः
आर्थोपेडिक्स सर्जन
किंग फैसल हॉस्पिटल
मक्का मुकर्रमा, सउदी अरब

किताब मिलने का पताः
मौ.हामिर्दुरहमान
अल मकतबुलआलिया, भोपाल
मो. 9584675664

विषय सूची

डॉ. मुहम्मद फारूक

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

शुरू अल्लाह के नाम से जो दयावान और बहुत कृपाशील है।

किताब लिखने का मकसद

इस्लाम का इतिहास सृष्टी से जुड़ा है। जमीन पर इस्लाम का इतिहास उसी दिन प्रारंभ हो गया था जिस दिन जमीन पर पहला आदमी, आदम अले. और पहली औरत हव्वा अले. ने अपने चरण कमल रखे। इन दोनों को अल्लाह ने जो रास्ता दिखाया वो इस्लाम था जो मोहम्मद स.अ.व. अन्तिम पैगम्बर पर पूर्ण कर दिया गया अब महाप्रलय तक कोई नया कानून और ना ही कोई नई किताब भेजी जाएगी अर्थात मोहम्मद स.अ.व. कलकी या अन्तिम सन्देष्टा हैं। जिसको किताब मे लिखा जा चुका है।

इस किताब को लिखने के तीन मकसद हैं

1 – यह छोटी सी किताब उन गैर मुस्लिम और मुसलमानों के लिए लिखी गई हैं जो कम इल्म और मीडिया के गलत प्रचार से इस्लाम को सही तरीके से नही समझ पाते और शक और शुब्हे में रहते हैं। जो उनके ईमान को कमजोर कर देता है। यह किताब उन लोगों को ईमान के झरने से सैराब करेगी।

2 – गैर मुस्लिमों और मुसलमानों के जेहन या मन में जो सवाल उठते हैं उन सवालो के जवाब न तो मुसलमानों को पता होते हैं। और न ही वो गैर मुसलमानों को दलील से दे पाते हैं। उन सवालों के जवाबात कुरआन–हदीस की दलीलों से दिये गये है।

3 – इस किताब को कुरआन और हदीस की दलीलों और हवालों के साथ लिखा गया है। ताकि लोगों को सही इस्लाम समझ में आए

फिक्रापरस्त, गुमराह, बिदअती मुसलमानों से बचाकर सही और गलत, खरे और खोटे हलाल और हराम को समझा दिया गया है।

इस्लाम की बुनियादी शिक्षा को हासिल करना हर मुसलमान मर्द और औरत पर फर्ज है। इस्लाम इस दुनिया का अकेला रहनुमा दीन है। इसकी शिक्षायें ठीक इन्सानी फितरत (NATURE) के अनुसार हैं। अगर इस्लाम को अपनी पूरी जिन्दगी में पूरी जिम्मेदारी के साथ पूरे तौर पर लागू कर दिया जाए तो पूरी जिन्दगी सुख शान्ति, चैन व खुशी और खुशहाली के साथ गुजरेगी और हर मुसलमान मर्द और औरत सही मानों मे हयाते तयैबा पाकीजा जिन्दगी का मजा उठाएगा यह एक जंची तुली सच्चाई है। जो हर शक व संदेह से बुलन्द है।

4 – आखिरी में उन आलिमों जो सउदी अरब मक्का में मेरे उस्ताद हैं जिनमे मैं कुरआन अरबी व हदीसें पढ़ रहा हुं उनके मश्वरे और खुसूसी तौर पर मौलाना शेख ऊज़ैर शम्स जो 25 साल से मक्का में इस्लामी किताबों पर नजरे सानी करते आ रहे हैं, उन्होने इस किताब पर नजरे सानी की है में उनका तहे दिल से शुक्रगुजार हूँ और अल्लाह से दुआ करता हूँ मेरे सच्चे इख्लास के साथ इस किताब को इस्लाम कि सच्चाई के लिए कसौटी बना दे। और भटकी हुई इन्सानियत को सही राह दिखा दें।

5 – अगर किताब की प्रिन्टिंग में या कोई गलती हो तो जरूर मश्वरा दें हम सच्चाई के साथ इस्लाह करेंगे।

6 – मैं अल्लाह से दुआ करता हुं। सच्चा इस्लाम लोगों के दिलों में दाखिल कर दे और बिदअत व शिर्क को नेस्त व नाबूद कर दे।

सम्पादक

डा. मोहम्मद फारूक

2 – जरूरी बात

1 – किसी भी चीज़ को बनाने से पहले बनाने वाले का पहले से मौजूद होना जरूरी है।

2 – हर बनी चीज़ का कोई न कोई बनाने वाला जरूर होता है।

3 – बनी हुई चीज़ बनाने वाले की मोहताज होती है।

4 – मोहताज चीज़ काम दिया करती है, काम लिया नहीं करती।

सोचो !

1 – पेन या माचिस बनाने वाला इन्सान कभी भी पेन या माचिस जैसे आकार का नहीं हो सकता तो पता चला बनी हुई चीज कभी भी बनाने वाले जैसी और न ही उसके बराबर की हो सकती है।

2 – अब सृष्टी या कायनात या दुनिया बनाने वाला सृष्टा, ईश्वर, या अल्लाह कभी भी अपनी बनाई हुई रचना या सृष्टी जैसा नही हो सकता।

3 – अब हम कह सकते हैं। सूरज, चॉद, जमीन, आसमान बनाने वाला कभी भी अपनी बनाई हुई रचना जैसा नही हो सकता।

4 – सृष्टा या अल्लाह निराकार, अजन्मा, अविनाशी, जिसको कभी भी मौत नहीं आएगी।

सही सृष्टा या अल्लाह की पहचान

कुरआन की यह सूरः या अध्याय 112 यह चार लाइनों में सही और गलत ईश्वर की पहचान कर देती है।

1 – कहो की वह अल्लाह एक ही है।

2 – अल्लाह तआला बेनियाज है। यानी सब उसके मोहताज हैं वह

किसी का मोहताज नहीं

3 – न किसी का बाप है ना किसी का बेटा।

4 – और कोई उस जैसा नहीं।

तो वो अकेला है। वह हमेशा से है और हमेशा रहेगा। उसको किसी चीज की जरूरत नही सब को उसकी जरूरत है। सारी सृष्टी उसकी रचना है और रचना या बनी हुई चीज़ कभी भी रचयिता या बनाने वाले के बराबर की नहीं हो सकती सृष्टी की हर बनी हुई चीज़ बनाने वाले की मोहताज है जैसी उसे बनाई वैसी बन गई अब यह बात सोचना है बनी हुई चीज मोहताज है जब वह बनाने की मोहताज है। जैसे सूरज, चांद, ज़मीन, आसमान, इन्सान सारी सृष्टी बनाने वाले की मोहताज है।

5 – सूरज बना है चांद बना है जमीन बनी है। आसमान बना है इन्सान बना है यह सारी बनी चीजें बनाने वाले की मोहताज है।

मोहताज सृष्टी की पूजा या इबादत मत करो बल्कि इन सब चीज़ों के पैदा करने वाले की इबादत या पूजा करो।

क्यों !

1 – सारी सृष्टी ईश्वर की रचना है रचना बगैर रचियता के कुछ पैदा नहीं कर सकती।

2 – न सृष्टी किसी को मौत दे सकती है न जिन्दगी और न ही किसी को फायदा या नुकसान।

3 – पता चला सृष्टी पूजा या इबादत के लायक नहीं पूजा तो उसकी की जायेगी जिस ने इन सभी चीजों को पैदा किया।

NATURE AND NATURAL OBJECTS

प्रकृति और प्राकृतिक वस्तुओं मे फर्क

1 – लोगों के बीच एक गलतफहमी फैलाई गई है कि सारी दुनिया नेचर या प्रकृति है यानी हर चीज खुदा या ईश्वर है।

2 – हर चीज NATURE प्रकृति नहीं बल्कि NATURAL OBJECTS प्राकृतिक वस्तुएं हैं। OBJECT पूज्य नहीं उसको पैदा करने वाला पूज्य है।

गौर फिक्र – ये सृष्टी क्या अपने आप बनी (By chance)

नेचर में सूरज, चांद, पहाड़, इन्सान इत्यादि ये सारी चीजें अपने आप पैदा हो गई या इन्सान ने इन्हें पैदा किया।

1 – अब नास्तिक लोगों से सवाल है ?

यह प्रकृति NATURE जिन्दा है या मुर्दा?

यह प्रकृति NATURE अपने आप पैदा हुई और कौन इसको संभाले है?

क्या इनके पास KNOWLDGE ज्ञान है?

क्या यह किसी चीज को पैदा कर के अस्तित्व में ला सकती है ?

क्या इसमें WISDOM ज्ञान और Feeling भावनाए पाई जाती है ?

मगर नास्तिक लोगों के पास इसका जवाब नहीं।

सवाल का हल

वह ईश्वर सृष्टा या अल्लाह अपनी सृष्टी जैसा नहीं है।

1 – और कोई उस जैसा नहीं। (कुरआन्–112 : 4)

2 – उस जैसी कोई चीज नहीं और वह सुनता देखता है। (कुरआन्–42 : 11)

3 – तुम्हारा पूज्य अल्लाह ही है जिस के सिवा कोई पूज्य नहीं उसका ज्ञान हर चीज पर छाया हुआ है। (कुरआन्–20 : 18)

4 – वह रब है आसमानों का और जमीन का और जो उनके दर्मियान हैं। पस उसकी इबादत करों और साबित कदम रहो क्या तुम उसका हमनाम (उसके तुल्य या जैसा) जानते हो। (कुरआन्–19 : 65)

5 – सब तरह की तारीफ गुणगान अल्लाह ही के लिए हैं जो सारी सृष्टी मख्लूकात का पालनहार है। सूरः फातिहा 1:1,

प्रकृति और प्राकृतिक वस्तुओं NATURAL OBJECTS में फर्क

ऐ लोगों प्राकृतिक वस्तुओं को प्रकृति कह कर ईश्वर से पिन्ड ना छुडाओ।।

अगर सच्चे हो तो प्रकृति और प्राकृतिक वस्तुओं का फर्क समझाओं।।

प्रकृति (काम) पर तो ध्यान भी नहीं लगाते हो और प्राकृतिक वस्तुओं से पूरा फायदा उठाते हो और उन्हें ही पूज्नीय ठहराते हो और प्यारे–प्यारे ईश्वर को अंगूठा दिखाते हो।।

☞ सोचो पूजा किसकी की जाए जिसने हमें बनाया या जिसको हम ने बनाया।

☞ एक काम होता है दूसरा काम करने वाला, काम बगैर कर्ता के होता नहीं यही बात तुम्हें है समझाना।

अगर एक इन्सान 15 साल लगा कर कोई सुन्दर सी सीनरी बनाता है और अपना सारा कौशल, दक्षता तथा कार्य कौशल उस पर लगा देता है। एक व्यक्ति उस सीनरी की पूजा शुरू कर देता है। बिना ये जाने क इसको बनाया किसने, लोगो ने यही रास्ता पकड़ रखा है ईश्वर या अल्लाह की पूजा नहीं करते बल्कि उसकी बनाई चीजों को पूज्य ठहराते हैं। और बनाने वाले को अंगूठा दिखाते हैं। जब ईश्वर हमसे आमालों का हिसाब लेगा तो हम क्या जवाब देंगे हमें होश में आ जाना चाहिये। क्यों उसकी बनाई हुई चीजों को पूजा जा रहा है। हम उसको क्यों भूल बैठे हैं। और छोड़ बेठे हैं। तो वह

ईश्वर हमसे कभी भी खुश नहीं होगा। जब उसके अधिकार या हक़ बेजानदार बेजुबान चीजों को दे दिये गये हैं। अगर एक व्यक्ति किसी की मदद करता है, और उसकी जरूरत पूरी करता है, उस व्यक्ति ने मदद करने वाले को नहीं देखा, अगर वो उसकी पत्थर, या काकरोच जैसी आकृति बना कर पूजा याचना शुरू कर देता है, जब उसको मालूम होगा की उसको पत्थर या काकरोच जैसा आकार दिया गया है तो वह कभी भी खुश नहीं होगा। जब इन्सान को इतनी तकलीफ होगी तो सारी सृष्टी को पैदा करने वाला और पालने वाला कितना दुखित होगा। सारी सृष्टी में ईश्वर के कामों की निशानियां फैली है। जैसे सूरज, चांद, पहाड़, इन्सान, सितारे ये निशानिया (SIGNS) हैं। तो यह बात जाहिर हो चुकी है कि बनाने वाला कभी बनी चीजों जैसा नहीं हो सकता तो हम कभी भी ईश्वर की कल्पना उसकी बनाई चीजों पर नहीं कर सकते। जब भी हम ईश्वर की निशानी देखें तो हमारी सोच बनी चीजों तक ही सीमित न रह जाए बल्कि बनाने वाले की हमें पहचान हो जाए। अगर कोई शख्स किसी को एक कलम उपहार या तोहफे में देता है। और कई दिन के बाद जब अलमारी में पेन दिखता है, तो वह उपहार पेन को देखकर पेन देने वाला याद आ जाता है। और वह उसको पहचान लेता है। इसी तरह ईश्वर को पहचानें उसकी बनाई हुई सृष्टी को देखकर। इस सारी दुनिया में बनी हुई चीजों में सबसे ज्यादा अक्लमंद या बुद्धिमान इन्सान है। फिर वो अपने से कम अक्लमंद और बेजुबान, बेज़ान चीजों को पूज रहा है। जैसे आज इन्सान पत्थर, पेड़, कब्रों और मरे हुए लोगों को पूज रहा है। और सबसे बड़े ईश्वर या अल्लाह, हर चीज़ को पैदा करने वाले को भुला बैठा है।

अल्लाह या ईश्वर एक है या कई

1 – कुल हुवल्लाहू अहद। (कुरआन:112:1)

कहो कि अल्लाह एक है।

2 – और लोगों तुम्हारा पूज्य अकेला एक है। उस बड़े मेहरबान और रहम वाले के सिवा कोई पूज्य इबादत के लायक नहीं। सूरः (कुरआन: 2:163)

3 – अल्लाह सच्चा ईश्वर उसके सिवा कोई पूज्य या इबादत के लायक नहीं जिंदा हमेशा रहने वाला उसे न उंघ आती है और न नींद, जो कुछ आसमानों में और जो कुछ जमीन में है, सब उसी का है कौन है कि उसकी इजाजत के बगैर किसी की सिफारिश कर सके। जो कुछ लोगों के सामने हो रहा है और जो कुछ पीछे हो चुका उसे सब मालूम है। और वे उसकी मालूमात में से किसी चीज पर काबू हासिल नहीं कर सकते हॉ जितना वह चाहता है।

उसकी बादशाहत और इल्म आसमान और जमीन सब पर हावी है और वह अल्लाह उनकी हिफाजत से न थकता है और न उबता है वह तो बहुत महान और बहुत बड़ा है। (कुरआन: 2:255)

4 – अलिफ–लाम–मीम अल्लाह वह है जिसके सिवाय कोई माबूद नहीं जो जिन्दा है और सभी का रक्षक है। (कुरआन: 3:2)

5 – और वही तो है जो मां के पेट में जैसी चाहता है तुम्हारी शक्लें बनाता है उस गालिब हिकमत वाले के सिवा कोई इबादत के लायक नहीं । (कुरआन: 3:6)

6 – खुदा वह सच्चा माबूद (पूज्य) है , कि उसके सिवा कोई इबादत के लायक नहीं वह कयामत महाप्रलय के दिन तुम सब को जरूर जमा करेगा और खुदा से बढ़कर बात का सच्चा कौन है। (कुरआन: 4:87)

7 – कहो कि तुम अल्लाह के सिवा ऐसी चीज की पूजा करते हो, जिसको तुम्हारे नफा और नुकसान का कुछ भी अख्तियार नहीं और अल्लाह ही सब कुछ सुनता जानता है। (कुरआन: 5:76)

8 – तुम तो खुदा को छोड कर बुतों (मूर्तियों) को पूजते हो और तूफान बांधते हो तो जिन लोगों को तुम खुदा के सिवा पूजते हो वे तुमको रोजी देने का अख्तियार नहीं रखते, पस खुदा ही के यहां से रोजी तलब करो और उसी की इबादत करो, उसी की तरफ तुम लौट कर जाओगे। (कुरआन: 21:17)

9 – जिन लोगों को ये लोग खुदा को छोड़ कर पुकारते हैं पूजते हैं वे किसी चीज के पैदा करने वाले नहीं हैं। बल्कि खुद पैदा किए हुए हैं वे तो मर चुके हैं जिन्दा भी नहीं हैं। और उन्हें तो यह भी खबर नहीं कि दोबारा कब ज़िन्दा किए जायेंगे। (कुरआन: 16:20–21)

10– लोगो! एक मिसाल बयान की जाती है उसे गौर से सुनो अल्लाह के सिवा तुम जिन – जिन को पुकारते रहे हो वे एक मक्खी तो पैदा नहीं कर सकते अगर सारे के सारे जमा हो जायें, बल्कि अगर मक्खी उनसे कोई चीज ले भागे तो यह तो उसे भी उस से छीन नहीं सकते। पूज्य और पूज्नीय दोनों गये गजरे हैं। (कुरआन: 22:27)

11– अगर आसमान और जमीन अल्लाह के सिवा और कोई खुदा या पूज्य होता तो जमीन व आसमान फसाद से भर जाते, जो बातें ये लोग बनाते हैं अर्श का मालिक खुदा उनसे पाक है (कुरआन: 21:22)

नोटः– जिस मूर्ती या पत्थर की हम पूजा करते हैं वह पुराना हो जाता है तो हम बदल देते हैं। और अगर गिर जाए तो टूट जाता है। वो कैसा भगवान जो पुराना हो जाए तो बदला जाए और गिर जाए तो टूट जाए जो अपनी हिफाजत नहीं कर सकता वो हमारी परेशानी कैसे दूर करेगा।

EXISTENCE OF THE CREATOR
अल्लाह (ईश्वर) का अस्तित्व

दो निष्कर्ष (फैसले) हम इन्सानी जिन्दगी और सारी दुनिया पर रिसर्च करने के बाद ले सकते हैं।

1 – इन्सान LIMITED सीमित गुणों के साथ पैदा किया गया है, इस लिए उसे हर चीज कि जरूरत है।

2 – अगर इन्सान (IMMORTAL) अमर होता तो उसे किसी भी (CREATOR) या ईश्वर की जरूरत नहीं होती।

जैसे :–

1 – इन्सान और दूसरे जीव वा मख्लूख वो अपनी जिन्दगी और ज़िन्दा रहने के लिए हवा, पानी खाना और बहुत सी चीजों की जरूरत है।

2 – बहुत सी रिश्तेदारी (Relation ship) सोसाईटी मैं है जो इन्सान की जरूरत है।

3 – इन्सान (LIMITED) आकार ज्ञान, इल्म और POWERS शक्तियां, ये सब (LIMITED) सीमित हैं। अपने आप को जीवित रखना और सारी ज़रूरतों का इन्तिज़ाम करना इन्सान के बस की बात नहीं।

4 – ज़िन्दगी LIMITED सीमित है बदनी तौर पर भी और वक़्त टाइम भी सीमित है।

5 – इसलिए इन्सान (अमर) हमेशा रहने वाला नहीं क्योंकी उसकी शुरूआत पैदाइश से होती है और खात्मा मौत पर, इन्सान एक मुकर्रर वक्त का मेहमान है।

6 – सारी दुनिया या कायनात भी LIMITED सीमित है। सूरज, चॉद, जमीन, आसमान सब LIMITED सीमित है। यहॉ तक की इस दुनिया में हर चीज LIMITED सीमित है।

7 – जरूरी रस इस बात का यह निकलता है कि इन्सान और सारी दुनिया की हर चीज को LIMITED सीमित और महदूद बनाया किसनें ?अब इस बात को समझने में हमें कोई भी परेशानी नहीं होगी कि वह ईश्वर या अल्लाह INFINITE अमर और UNLIMITED लामहदूद अस्तित्व या वजूद होगा जो LIMITED सीमित चीजों को पैदा कर रहा है। कि वो POWERFUL सृष्टा या अल्लाह जो UNCREATED बिना पैदा हुआ ETERNAL अमर और Free Existence स्वतंत्र अस्तित्व रखता है।

इस सृष्टी या कायनात में जो नियम LAWS काम कर रहे हैं NATURAL LAWS प्राकृतिक नियम कहलाते हैं । इस बारे में 3 सोचें दिमाग में आ सकती हैं।

1 – इन नियमों को किसने पैदा किया।

2 – कौन इनको चला रहा है।

3 – क्या इन (NATURAL LAWS) प्राकृतिक नियमों ने सारी दुनिया को पैदा किया।

जवाबः–

1- MATTER या पदार्थ जो दुनिया में पाया जाता है आश्रित, निर्भर DEPENDENT है (NATURAL LAWS) प्राकृतिक नियमों पर ।

नियमों या LAWS पदार्थ या MATTER पर काम या Function कर रहे हैं। इसलिए यह दोनों चीजें पदार्थ (MATTER) और (NATURAL LAWS) प्राकृतिक नियम दोनों पैदा किए गये हैं हर पैदा हुई चीज या वस्तु बनाने वाले की मोहताज है। मोहताज चीजें चाहे वो पदार्थ MATTER हो या NATURAL LAWS ये आश्रित DEPENDENT Existence ([redacted]) अस्तित्व है। वो दोनों से अलग थलग वजूद या Existence है बनाने वाली Power जो Independent अस्तित्व है।

यह Crector अल्लाह जो UNLIMITED लामहदूद Unimaginable सोच से ऊपर ETERNAL अमर SEL SUBSISTENT जिसे किसी की जरूरत नहीं और जो अकेला इबादत और पूजने लायक हो उसे ही इस्लाम में अल्लाह कहते हैं।

ये बातें जो ऊपर पढ़ी गई हैं। इन पर गौर फिक्र करने से सही और गलत ईश्वर की पहचान हो जाती है। अब इन बातों पर रिसर्च करें कुरआन से।

1 – क्या ये किसी के पैदा किए बगैर ही पैदा हो गये हैं या खुद अपने आप पैदा करने वाले हैं। (कुरआन:52:35)

2 – हमने तुम को पहली बार भी तो पैदा किया है तो तुम दोबारा उठने को क्यों सच नहीं समझते। (कुरआन:56:57)

3 – देखो तो कि जिस नुत्फे या वीर्य को तुम औरतों के रहम मे

डालते हो क्या तुम इस से इन्सान को बनाते हो या हम बनाते हैं। (कुरआन्–56:58–59)

4 – और तुमने पहली पैदाइश तो जान ही ली है फिर तुम सोचते क्यों नहीं । सूरः तूर 52:62

5 – भला देखो तो कि जो कुछ तुम बोते हो तो क्या तुम उसे उगाते हो या हम उगाते हैं । सूरः वाकिया 56: 63–64

6 – भला देखो तो कि जो पानी तुम पीते हो क्या तुमने उसे बादल से नाजिल किया है, या हम नाजिल करते हैं। अगर हम चाहें तो उसे खारा कर दें फिर तुम शुक्र क्यों नहीं करते। सूरः वाकिया 56: 68–69–70

7 – वह अल्लाह सबसे पहला और सबसे पिछला और अपनी कुदरतों से सब पर जाहिर और अपनी ज़ात (अस्तित्व) से पोशिदा छुपा है। (सुरः हदीद 57:3)

8 – जो बात को सुनते हैं और अच्छी बातों की पैरवी करते है। यही वो लोग हैं जिन को खुदा ने हिदायत (सही रास्ता) दी और यही अक़्ल वाले हैं। (सुरः जुमर 39:59)

9 – जब इन्सान को तकलीफ पहुँचती है, तो हमें पुकारने लगता है। फिर जब हम उसको अपनी तरफ से सुख–चैन (नेअमत) बख्शते हैं, तो कहता है कि यह तो मुझे मेरे इल्म (ज्ञान व सूझबूझ) की वजह से मिली है, नहीं बल्कि वह आजमाइश (परीक्षा) है मगर उनमे से अक्सर नहीं जानते। (सूरः जुमर 39 : 49)

जो लोग इनसे पहले थे वो लोग भी यही कहा करते थे, जो कुछ वे

किया करते थे उनके कुछ काम भी न आया। (सूरः जुमर 39 : 50)

10– हमने तुम पर किताब लोगों की हिदायत के लिए सच्चाई के साथ नाजिल किया है, तो जो शख्स हिदायत पाता है तो अपने (भले के लिए) और जो गुमराह होता है तो गुमराही से अपना नुकसान करता है और ऐ पैगम्बर ! तुम उनके जिम्मेदार नहीं हो। (सूरः जुमर 39 : 41)

11– खुदा ही हर चीज का पैदा करने वाला है और वही हर चीज का निगहबान है उसी के पास आसमानों और जमीन की कुंजिया हैं और जिन्होने खुदा की आयतों (निशानियां) का इन्कार किया वही नुकसान उठाने वाले हैं। (सूरः जुमर 39: 62–63)

12– हर जान को मौत का मजा चखना है और तुमको कियामत (महा प्रलय) के दिन तुम्हारे आमाल का पूरा बदला दिया जाएगा तो जो शख्स जहन्नम (नर्क) की आग से दूर रखा गया और जन्नत स्वर्ग में दाखिल किया गया वह मुराद (कामयाबी) को पहुँच गया और दुनिया कि ज़िन्दगी तो धोखे का सामान है। (सूरः आले इमरान 3 : 185)

INVALUABLE RESERCH
बैशकीमती अमूल्य बहुमूल्य रिसर्च 63 साल की जिन्दगी इन्सान की

1 – अल्लाह ने इन्सान को अपनी इबादत (पूजा) के लिए तथा कौन इन्सान अच्छे आमाल (कार्य) करता है, इन्सान पर तकलीफ और राहत डालकर उसके ईमान का इम्तिहान (TEST) लेने के लिए पैदा किया गया है।

2 – क्या इन्सान की ज़िन्दगी सिर्फ तीन साल की है अल्लाह की इबादत के लिए आओ इस पर रिसर्च करें।

1 – मोहम्मद स.अ. वसल्लम ने कहा मेरी उम्मत की उम तकरीबन 60 और 70 साल के बीच होगी। (हसन) (तिर्मिजी किताबुददुआ – 3550)

2 – मोहम्मद स. अ. वसल्लम ने कहा मेरी उम्मत की उमरें तकरीबन 60 और 70 साल के बीच होगी, बहुत कम इन्सान इसके ऊपर की उम्र पायेंगे। (तिर्मिजी व इब्ने माजा–5280)

1 – 12–13 साल की जिन्दगी बचपन की गुजर जाती है उसमे खेलकूद और मनोरंजन में गुजर जाती है कोई जिम्मेदारी दीन के एतबार से उस पर नहीं होती।

2 – अगर हम 13 साल बचपन के 63 साल जिन्दगी से निकालें तो 50 साल हमारी जिन्दगी के बाकी रहे।

3 – हम आमतौर पर पूरी दुनिया में INTERNATIONAL LAW के मुताबिक 8 घन्टे रोज नोकरी या SERVICE करते है 24 घन्टे में 17 साल उसनें नौकरी में गवा दिए।

4 – डाक्टर RULES के मुताबिक सेहतमन्द बदन के लिए 8 घन्टे सोना जरूरी है अगर मैं 24 घन्टे में रोज 8 घन्टे सोता हूँ तो 17 साल मैने सोने में गुजार दिए 63 साल की जिन्दगी में।

5 – बचपन, सर्विस, सोने में 46 साल गुजर गए, बिना इबादत और अल्लाह को पहचाने।

6 – 17 साल से 14 साल खाने पीने, यहाँ वहाँ सफर बीवी बच्चों के साथ, दोस्तों के साथ, गुनाहों में, कम्प्यूटर, मार्केट, खेलकूद, टेलीववीजन में गुजर जाते हैं। अल्लाह के लिए हमारे पास 3 साल बचे।

नोट :– कोई भी शख्स इस दुनिया में अपनी मर्ज़ी से नही आया अगर किसी से पूछे आप की उम्र क्या है और वह कहता है 30 साल अब पूछो 30 साल पहले आप कहाँ थे उसके पास जवाब नहीं, इससे पता चला इन्सान अपनी मर्ज़ी से इस दुनिया में नही आया न ही अपनी मर्जी से जाएगा, तो हमें अपनी जिन्दगी भी उसी की मर्ज़ी से गुजारना चाहिए जिसके हाथ में जिन्दगी और मौत है। और जो पैदा करने वाला है।

कुरआन में अल्लाह फरमाते हैं :–

तुम अल्लाह का इन्कार कैसे कर सकते हो हालाँकि तुम मुर्दा थे उसने तुम्हें ज़िन्दा किया फिर तुम्हें मौत देगा फिर ज़िन्दा करेगा फिर उसकी तरफ लौटाये जाओगे । (सूर : बकरः 2 : 28)

गौर !

1 – कुरआन में 5 बुरे और 3 अच्छे लोगों को खिताब है। 1 – बुरे लोग : काफिर (ईश्वर के इन्कारी) मुशरिक (ईश्वर को छोड़ कर दूसरी चीजों को पूजने वाले) मुनाफिक (मुहँ से कहते हैं ईश्वर को मानते हैं, पर करते हैं अपने मन की) फासिक (बड़े बड़े बुरे गुनाहों को करने वाला) फाजिर बड़े बड़े गुनाहों को करने वाला और अल्लाह की हदों को पार करने वाला ।

2 – अच्छे लोग (ईमान वााले) तीन तरह के हैं : मोमिन, मुस्लिम, मुहसिन यह तीन दर्जे हैं जिसमें मुहसिन सबसे ऊँचा है।

कितने दिन दुनिया में रहे कुरआन से जवाब

1 – और उनको वह दिन याद दिलाएं जिसमें अल्लाह उनको अपने पास जमा करेगा (तो उनको ऐसा महसूस होगा) के गोया वह (दुनिया में) सारे दिन की एक आध घड़ी रहें होंगे और आपस में एक दूसरे को पहचानेंगे भी जिन लोगों ने खुदा के सामने हाजिर होने को झुठलाया वे घाटे में पड़ गये और वे हिदायत पाने वाले नहीं थे। (सूरः युनुस 10:45)

2 – और जिस दिन कियामत बरपा होगी गुनहगार कस्में खायेंगे कि वे (दुनिया में) एक घड़ी से जयादा नहीं रहे थे इसी तरह वे (रास्ते से) उल्टे जाते थे। और जिन लोगों को इल्म और ईमान दिया गया था वे कहेंगे कि खुदा की किताब के मुताबिक तुम कियामत तक रहे हो और यह कियामत का दिन है लेकिन तुमके इसका यकीन ही नहीं था। (सूरः रूम 30 : 55–56)

3 – पस् (ऐ मुहम्मद!) जिस तरह और बुलंद हिम्मत पैगम्बर सब्र करते रहे हैं उसी तरह तुम भी सब्र करो और उनके लिए अजाब जल्दी न मांगो, जिस दिन यह उस चीज को देखेंगे , जिसका उनसे वादा किया जाता है तो (ख्याल करेंगे कि) गोया (दुनियामें) रहे ही न थे, मगर घडी भर। यह कुरआन पैगाम है सो (अब) वही हलाक होंगे जो नाफरमान थे।(सूरः अहकाफ 46:35)

4 – जो शख्स उस से डर रखता है तो तुम उसी को डर सुनाने वाले हो जब वे उसको (कियामत) देखेंगे तो ऐसा ख्याल करेंगे कि गोया (दुनिया में सिर्फ) एक शाम या सुबह रहे हैं। (सूरः नाजिआत 79 : 45–46)

अगर हम एक अकेले सच्चे ईश्वर पर आस्था यकीन या सच्चा ईमान रखे उसी के बताए हुए तरीके के मुताबिक जिन्दगी को गुजारे तो क्या फायदा होगा आओ इन बातों पर गौर व फिक्र करें !

ईश्वर पर सही आस्था या सही अकीदे के फायदे

1 – अल्लाह की खुशी हासिल करना और उसी की इबादत करना, गलत आस्थाओं से अपने आप को बचाना।

2 – दिमाग को साफ कर देता है जिहालत से, शक और शुब्हात से, जिस तरह नास्तिक लोग गलत यकीन और आस्था की वजह से ईश्वर से दूर हो जाते हैं।

3 – दिल और दिमागी सुकून मिल जाता है।

4 – नियत, इरादा, सोच और आमाल सबको साफ और ईश्वर या अल्लाह की मर्जी पर सब कुर्बान करने को तेयार हो जाता है, अपनी हर खुशी।

5 – हर दुनयावी और लेन देन के मामलात और अल्लाह या ईश्वर व रसूल तथा सारे इन्सानों के हुकूक के बारे में वो होशमन्द हो जाता है।

6 – सही अकीदे व आस्था से सारे इन्सान सही रास्ते और सही यकीन पर एक उम्मत NATION बन जाते हैं।

7 – इन्सान को दुनिया और आखिरत दोनों जहानों की खुशी मिलती है सारी कामयाबी और बरकतें।

8 – सही अकीदे या सही रास्ते पर सही ईश्वर पर यकीन करने से पिछले सारे बुरे कर्म माफ हो जाते हैं। और इन्सान ऐसा हो जाता है जैसे आज ही माँ के पेट से पैदा हुआ हो।

9 – घमंड तकब्बुर खत्म हो जाता है, वो ईश्वर का बन्दा बन कर रहता है।

ईमान के तीन दर्जे

1 – मुस्लिम।

2 – मोमिन।

3 – मोहसिन।

हर ईमान वाले को अपने ईमान का मुहासबा व तहकीक करना चाहिए कि वह किस दर्ज़े पर है। अच्छी सिफातों का जिन्दगी में आना और अमलों पर मजबूती से जमना तकवा और आखिरत की फिक्र में डूब जाना और हर काम अल्लाह की रज़ा के लिये करना ये कुछ अलामतें (निशानियां) हैं ईमान की।

सही ईमान की तहकीक (हदीस)

1 – अबू हरैरह रजी. अल्लाहू अन्हू से रिवायत है कि रसूल सल.अ.व. ने फरमाया की यहूदी 71 फिर्कों में नसारा 72 फिर्कों में और मेरी उम्मत 73 फिक्रो मे बँट जाएगी। (हसन) (अबूदाऊद किताबुस्सुना–4597)

2 – मुआविया बिन अबी सुफियान हमारे बीच खडे हुए और कहा अल्लाह के रसूल स.अ.व. खडे हुए थे हमारे बीच और फरमाया जो लोग तुम से पहले थे अहले किताब वे 72 फिर्कों में बँट गए और मेरी उम्मत 3 फिर्कों में बँट जाएगी 72 जहन्नम में जाएंगे सिर्फ एक (मुसलमानों की एक जमाअत) बस जन्नती होगी। (हसन) (अबूदाऊद किताबुस्सुना–4597)

नोटः– 72 फिर्के जहन्नमी होंगे जो मुश्रिक और बिदअती होंगे।

एक जमाआत (सही अक़ीदे पर होगी) जो जन्नती होगी।

अब सही ईमान को कैसे, कहाँ, किस जगह से हासिल करे

1 – अगर हमें अपने बहन की शादी करनी है चाहे हम पढ़े लिखे हों या अनपढ़ हम तहकीक करते हैं कि लड़का कौन है क्या काम करता है, और उसकी नौकरी क्या है, उसके माँ बाप और अख्लाक मामलात कैसे हैं।

2 – इसी तरह ज़मीन खरीदना हो तो उसके सारे कागजात देखते हैं। और अगर हमें सब्जी या फल खरीदने हों तो हम अच्छे अच्छे फल छाँटते हैं और भाव ताव करते हैं, और जब दिल को तसल्ली हो जाती है फिर उसको खरीदते हैं।

नोटः– हम तहकीक इसलिए करते हैं कि हमें सही चीज़ मिल ये दुनिया की एक मिसाल है। हमने अपनी बहन, जमीन और फल या सब्जियों को तहकीक के बगैर उसको अमली जामा नहीं पहनाते जब दिल मुतमइन हो जाता है तभी बहन की शादी या फल खरीदते हैं। क्या दीने इस्लाम की हमें इतनी भी मोहब्बत नहीं कि सही इस्लाम पर पूरी तहकीक कर के अमल करें। न कि रस्मी और बाप दादा जिस पर चलते आ रहे हैं।

3 – अगर आपको झरने से पानी पीना है और बिल्कुल साफ पानी चाहिए तो झरना जिस जगह से उबल रहा है उस SOURCE पर पहुँच जाओ वहां से जो पानी मिलेगा साफ और बगैर मिलावट के होगा। और अगर यह पानी बह कर कई नालियां बना लेता है और ये नालियां गन्दगी भी बहाकर लाएंगी तो गन्दा होगा और हम यह

समझ रह होंगे कि साफ पानी पी रहे हैं, एक ही झरने से लेकिन वह गन्दगी से मिला होगा ।

इस्लाम का झरना उबलता है तीन जगह से जिसका दावा 73 फिर्के करते हैं । सही कौन है ये आईना हम दिखाने की कोशिश करेंगे।

1 – कुरआन्।

2 – हदीसें सहीह। (सच्ची सुन्नते रसूल)

3 – सहाबा का रास्ता व मिन्हज।

ये तीनों इस्लाम के उबलते हुए झरने हैं। जहां से इस्लाम का झरना उबल रहा है। इन तीनों पर अल्लाह की मोहर लग चुकी है रसूल स.अ.व. और सहाबा से अच्छे इन्सान न इस दुनिया में गुजरे और न गुजरेंगे।

1 – आज हमने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और अपनी नेमत तुम पर पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन पसंद किया। (सूरः माइदा 5 : 3)

नोटः– अल्लाह ने इस आयत में (अल योम) के दिन का जिक्र करके वह दिन जब रसूल स.अ.व. आखिरी हज का खुतबा दे रहे थे उस दिन (दीन) मुकम्मल हुआ अकमल के माने ही यही होते है कि कोई भी चीज आगे और पीछे से उसमें दाखिल नहीं हो सकती पर आज इस्लाम में इन तीन चीजों कुरआन हदीस सहाबा के अलावा दूसरी शख्सीयतों को भी इस्लाम में वाजिब करार देकर उस पर अमल करवाने की कोशिश जारी है। सब को जाहिल करार दे दिया गया है। और कहा गया कि कुरआन हदीस तुम्हारी समझ में नहीं आएगा

बस हम और हमारे बुजुर्गों के रास्ते पर चलें बिना तहकीक के और कुरआन हदीस पढ़ने से रोका गया है।

2 – कह दीजिए कि अगर तुम अल्लाह तआला से मोहब्बत करते हो तो मेरे रसूल की इत्तिबा करो खुद अल्लाह तुम से मोहब्बत करेगा तुमहारे गुनाह माफ फरमा देगा और अल्लाह तआला बड़ा बख्शने वाला मेहरबान है। (सूरः आले इमरान 3 : 31)

नोट :– यहाँ पर अल्लाह की मोहब्बत की कसौटी अल्लाह के रसूल मोहम्मद स.अ.व. की इत्तेबा है रसूल के इत्तेबा पर दो खुशखबरी सुनाई जा रही है एक गुनाहों से माफी दूसरा अल्लाह आप से मोहब्बत करने लगेगा जब अल्लाह खुश हो गया और गुनाह माफ हो गये तो जन्नत का रास्ता आसान हो जाता है। पर यह दर्जा रसूल की इत्तिबा का हमने आज रस्मों रिवाज और फिर्कापरस्ती तथा शख्सीयतपरस्ती को दे दिया और जहाँ से इस्लाम और ईमान का झरना कुरआन हदीस और सहाबा का मिन्हज जिसको छोड़ कर बिना इल्म के अमल कर रहे हैं हक और बातिल, सच और झूठ, सही और गलत के पहचान के लिए इल्म हासिल करना हर मुसलमान पर फर्ज है क्योंकि इल्म ईमान का भी रहनुमा है और अमल का भी।

जब हम कलिमा कबूल करते हैं तो हम यह शपथ या अहद करते हैं कि अल्लाह और रसूल को मानेंगे तो किसने हमें मजबूर किया कि बुजुर्गों फिर्कापरस्त उलेमाओं की बातों को बिना दलील बिना इल्म के कबूल करो किसने हम पर वाजिब करार दिया, मतलब क्या हमने कलमे का इकरार सही से नही किया कलमा तो हमने ला इलाहा इल्लल्लाहु मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह पढ़ा है। इस कलमें में हमने

कुरआन और हदीस पर अमल करने का वादा किया इस कलमे को पढ़ने के बाद हमने अल्लाह के मदरसे में दाखिला ले लिया।

1 – स्कूल या मदरसे में दाखिला लेने का मतलब य नहीं कि सिर्फ हाजिरी देना।

2 – बल्कि मकसद यह है कि हमारे पास वह किताबे हैं जिसको पढना, होमवर्क, क्लास के लेक्चरों में बैठना फिर परीक्षा या इम्तिहान पास करना और अच्छे डिग्री प्राप्त करना तब हम सफल कहलायेंगे।

बदकिस्मती से हमारे पास अगर किताबें ही ना हों तो स्कूल जाने का मकसद ही क्या और यह तमन्ना रखना कि हम इम्तिहान पास करलेंगे इसी धोखे में इन्सान फंसा हुआ है।

हमारे पास फ्रिज, टी.वी. जरूरते जिन्दगी की सारी चीजें मौजूद हैं, पर क्या दुनिया में कुरआन की सबसे सही तफसीर इब्ने कसीर क्या मेरे पास है और रसूल की जिन्दगी अगर कहीं मौजूद है तो बुखारी, मुस्लिम, इब्ने माजा, अबूदाऊद, तिर्मिजी, नसई, हदीस की यह किताबें मेरे पास मौजूद हैं तो हम बगैर किताबों को पढ़े कैसे सही अमल कर सकते है।

मुस्लिम, मोमिन, मोहसिन

मुस्लिमः– 5 स्तूनों PILLERS पर ईमान और अमल करता है।

1 – कलमा।

2 – नमाज।

3 – रोजा।

4 – जकात।

5 – हज।

मोमिन :– 6 हुक्मों पर ईमान इल्म और अमल इन्सान को मोमिन बनाता है।

हदीस : उमर रजी. से रिवायत है जिब्रील अलै. इन्सान के शक्ल में आये और हुजूर स.अ.व. से पूछा कि बताइये ईमान क्या है आप ने फरमाया तुम अल्लाह को, उसके फरिशतों को, उसकी भेजी हुई किताबों को, उसके रसूलों को, और आखिरत को हक मानों और तकदीर की भलाई और बुराई पर ईमान लाओ। (सही मुस्लिम हदीस नं. 8)

मोहसनि : जिसका ईमान मुकम्मल हो जाता है वो तकवा गुनाहों से अपने आप को बचाता है। और अल्लाह की सोच उसके दिल और दिमाग में होती है। यह कि अललाह उसको देख रहा है या वो अल्लाह को देख रहा है। इस दर्जे पर सहाब–ए–कराम पहुंचे क्यों और कैसे। अमल की कबूलियत की तीन शर्तें हैं जो उनमें मुकम्मल थीं।

1 – इख्लासः अमल छुप कर सिर्फ अल्लाह के लिये करना।

2 – कुरआन और रसूल की हदीसों पर सौ फीसद अमल करना।

3 – हलाल रोजी कमाना और खाना ।

हम सच्चा ईमान कैसे लाएं

किसी भी शख्स को जन्नत में जाने के लिए कम से कम चार चीजों की जरूरत है निजात के लिए इन मे से एक भी कम हुई तो फेल हो कर खसारा उठाने वाला होगा।

मिसालः मान लो स्कूल में हमें चार किताबें अगल अलग TOPIC या सब्जेक्ट की दी जाती हैं, अब हमको सारे विषय में या किताबों में पास करने वाले नम्बर लाने हैं। एक में भी फेल हुए तो दोबारा इम्तिहान नहीं होगा। कुरआन में अल्लाह फरमाते हैं।

कसम है जमाने की, इन्सान धोखे (या खसारे) में है मगर वे लोग जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे और आपस में हक (बात) की तल्कीन करते रहे और सब्र की ताकीद करते रहे। (सूरः अस्र103:4)
कुरआन में जहाँ भी अल्लाह ने कसम खाई है वहाँ पर मुफस्सिरीन कुरआन का टीका कारों ने उसके दो माने बयान किए हैं एक यह है जिस चीज़ की कसम खायी है उस चीज को गवाह बनाया है और दूसरा कोई जरूरी बात कही जा रही है बड़े गौर से सुनो।

हम ईमान वैसे लाएं जेसे सहाब–ए–कराम लाए थे

1 – पस् अगर वे उस तरह ईमान लाएं जिस तरह तुम लाए हो तो वे हिदायत पर होंगे और अगर वे मुँह फेरें तो (समझ लो कि) वे मुखालिफत में पड गए अतः उनके मुकाबले में अल्लाह तुम्हारे लिए काफी होगा वह सब कुछ सुनने वाला जानने वाला है। 8सूरः बकरः 2 :137)

2 – सबसे पहले (मुहाजेरीन) देशत्यागने वाले और अन्सार (सहायता करने वाले) में से जिन लोगों ने पूरी तरह (एहसान) इत्तिबा या पालन किया अल्लाह उनसे राजी हुआ और वे उस से राजी हुए उनके लिए ऐसे बाग तैयार किए हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं वे हमेशा वहाँ रहेंगे और यही है बहुत बड़ी सफलता। (सूरः तौबा 9:100)

3 – और जो शख्स सीधा रास्ता मालूम होने के बाद पैगम्बर की मुखालिफत करे और मोमिनों के रास्ते के सिवा और रास्ते पर चले तो जिधर वह चलता है हम उसे उधर ही चलने देते हैं और (कियामत के दिन) जहन्नम में दाखिल करेंगे और वह बुरी जगह है। (सूरः निसा 4 : 115)

मोमिन से मुराद सहाब–ए–कराम हैं जो पैरोकार और कामिल नमूना थे। और इस आयत के नुजूल के वक्त उन के सिवा कोई गिरोह मोमिनो का मौजूद नहीं था जो मुराद हो।

ईमान अफरोज हदीसें

1 – अनस रजी. नबी स.अ.व. के हवाले से बयान करते हैं कि आप स. अ.व. ने फरमाया तुममें से काई ईमान वाला उस समय तक नहीं हो सकता जब तक की वह अपने (मुसलमान) भाई के लिए वही कुछ न चाहे जो अपने लिए चाहता है। (बाबुल ईमान बुखारी 13)

2 – अबू हुरैरह रजी. कहते हैं कि नबी स.अ.व. ने फरमाया उसकी कसम जिसके हाथ में मेरी जान है कि तुम में से कोई उस समय तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक की मैं उसके नजदीक उसके अपने बाप और उसकी अपनी औलाद से अधिक महबूब न हो जाऊं (बाबुल ईमान बुखारीः 14)

3 – अनस रजी. नबी स.अ.व. के हवाले से बयान करते हैं कि आप स.अ.व. ने फरमाया ये तीन बातें जिस किसी में होंगी वह ईमान की मिठास का मजा पाएगाः

1 – अल्लाह और उसके रसूल स.अ.व. उसके नजदीक दुनिया और इसमें पाई जाने वाली सारी चीजों से अधिक प्रिय हों।

2 – जिस किसी से मोहब्बत करे तो अल्लाह ही के लिए करे।

3 – कुफ्र में वापस जाने को ऐसा बुरा समझे जेसे आग में डाले जाने को हर कोई बुरा समझता है। (बाबुल ईमान बुखारीः 16)

4 – अबु उमामा रजी. से रिवायत है मोहम्मद स.अ.व. ने फरमाया जिसने अल्लाह के लिये दोस्ती की और अल्लाह के लिय दुश्मनी की और अल्लाह के लिये दिया और अल्लाह के लिये रोके रखा उसने अपने ईमान को मुकम्मल किया। (बाबुल ईमान बुखारी)

आदमी अपने अकीदा व आमाल में सुधार करने के बाद इस हालत को पहुँच जाता है कि वह जिस से कटता है अल्लाह की खुशनूदी

हासिल करने के लिए।

उसकी मोहब्बत और नफरत अपनी किसी जाती गर्ज और दुनियावी फायदे के लिए नहीं होती बल्कि सिर्फ खुदा और उसके दीन के लिए होती है। जब आदमी की यह हालत हो जाए तो समझो की उसका ईमान मुकम्मल हुआ।

नोटः– कुरआन के बाद सब से सही हदीसें बुखारी और मुस्लिम की हैं। हम सिर्फ दावा करते हैं अल्लाह और रसूल से मोहब्बत करने का और सही हदीस की किताबों को घर में लाकर पढ़ने और अमल की बात तो दूर उनकी जियारत किए बगैर मर कर चले जाते हैं। ओर समझते हैं कि रसूल से मोहब्बत करते हैं। पर उनकी बातो की इत्तेबा नहीं करते। अब सोचो सही किताबें ही न हों तो अमल किस चीज पर होगा। रस्मो रिवाज और शख्सीयत परस्ती पर न की इस्लाम पर।

कोई फकीर जब आकर हम से अल्लाह के वास्ते से एक रोटी माँगता है तो हम उसको बासी रोटी देते हैं। ताजी रोटियां तो हमारे लिए हैं। अल्लाह के नाम पर बासी रोटियां देना यह हमारा ईमान है।

क्या इस तरह का ईमान जो बगैर इल्म और बगैर समझ का हो हमको जन्नत में दाखिल कर सकता है ?जो अपने लिए पसंद करो वही दूसरों के लिए भी पसंद करो यह ईमान की अलामत है।

गौर करो ! गुमराह इन्सानों की मिलास एक अंधेरे कमरे में बंद इन्सानों की जो रास्ता ढूँढ रहे हैं, पर कुछ लोग इस अंधेरे से बाहर आना चाहते हैं, वो कोशिश करते हैं, और उस रोशनी पर पहुँच जाते हैं, जो एक दरवाजे से आ रही थी, जेसे ही उस दरवाजे पर पहुँचते हैं और दरवाजा खोलते हैं, तो सब कुछ दिखाई देता है। और

रोशनी में आ जाता है। यही रोशनी इस्लाम है।

5 – <u>जात पात को खत्म करने की ताकत सिर्फ इस्लाम में है।</u>

1 – अगर कोई कुत्ता किसी बर्तन में खा ले तो बहुत सारे लोग इस पर कोई ध्यान नहीं देंगे। लोग उसी बर्तन को बिना किसी नफरत की भावना से प्रयोग करेंगे लेकिन यदि एक हरिजन, जो निशचित रूप से एक इन्सान होता है, उसी बर्तन को छु ले तो बर्तन अशुद्ध और अछूत हो जाता है।

2 – मानव जाति में विभिन्नतायें भी नहीं पाई जातीं क्योंकि खाने, पीने, सोने, बोलने, जीने और मरने जैसे गुण सब में एकता पाई जाती है। तमाम इन्सानों के नसों में दोड़ने वाला खून भी एक है इस से अधिक अहम बात यह है कि समस्त मानव जाति एक ही माँ बाप आदम और हौवा, की सन्तान हैं। और इसी लिये सब की नस्ल और जाति एक है।

3 – अल्लाह या ईश्वर की सृष्टी में सारी मानव जाति समान है। सभी पालनहार के दास हैं और अन्य सभी की दास्ता व गुलामी से मुक्त, चाहे उसकी राष्ट्रीयता और नस्ल कुछ भी हो। जब अल्लाह ने सारी सृष्टी और इन्सान पैदा किए हैं तो ईश्वर को पावर है कि किसकी जाती क्या है, ब्राहमणों को नहीं। इस्लाम के अनुसार सारे इन्सान एक हैं। इस्लाम के अनुसार रंग,रूप,पैसा, गरीबी, अमीरी यह सब ईश्वर नें परीक्षा के लिए दिये हैं। न की यह चीजें जातीयों में बाँटने के लिये, अल्लाह से डरने वाला और उसकी शिक्षाओं का पालन करने वाला सब से उच्च है। न की रंग व नस्ल वाला।

4 – अन्तिम हज पर मोहम्मद स.अ.व. ने कहा किसी गोरे इन्सान को किसी काले पर अरब को किसी गैर अरब पर कोई प्रधानता नहीं अगर प्रधानता है तो सिर्फ तकवा (अल्लाहका डर) के बुनियाद पर।

हिन्दु धर्म में एकेश्वरवाद

हिन्दु धर्म की किताबों को हम तीन भागों में बाँट सकते है।

1– श्रुति।

2 – स्मृति। (मनुस्मृति)

3 – इतिहास (रामायण व महाभारत)

श्रुति में तीन प्रकार की किताबें हैं।

1 – वेदः– हिन्दुमत में सबसे महत्वपूर्ण समझे जाते हैं।
यह 4 प्रकार के हैं।

1 – यजुर्वेद :–

1–ANDHATAMA PRAVISHANTI YA ASAMBHUTI MUPASTAE (यजुर्वेद 40 : 9 समहिता रेल्फ टी.एच. गिफिथ पेज 538)

वो लोग अन्धकार में जा रहे हैं जो असंम्भूती की पूजा करते हैं।

नोट :– असंम्भूती : जो प्रकृतिक वस्तुएं (सूरज, चाँद, सितारे, जमीन) इत्यादि को पूजते हैं वह लोग और अन्धकार में जा रहे हैं। और वे लोग और अन्धकार में जा रहे हैं जो संम्भूती की पूजा कर रहे हैं। मूर्ती, पत्थर की बनी चीज़ें, कुर्सी, टेबल इत्यादि) अपने हाथ से कोई आकृति बनाते हैं और फिर उसको पूजते हैं।

2 – NA TASYA PRATIMA ASTI ईश्वर की कोई प्रतिमा (मूर्ती,

आकार, तस्वीर) नहीं। (यजुर्वेद 32 : 5 देवीचन्द्र M.A. पेज. 377)

SHUDHAMA POAPVIDHAM वह निराकार और शुद्ध है। (यजुर्वेद 40 : 8 समहिता रेल्फ टीएच. गिफिथ पेज. 538)

वह प्रज्जवलित, निराकार, धावरहित बेजोड़ और शुद्ध है जिसमें कोई बुराई छिद्र नहीं कर सकती, वह विशाल हृदय, बुद्धिमान सर्वागुणी तथा अस्तित्व धारक है, वह अंतकाल के लिए स्वामी है।

2 – अथर्ववेद :–

निः सन्देह ईश्वर महान है। (अथर्ववेद 20 : 58:3)

उपनिषद

EKAM EVADVITIYAM (चन्द्रोज्ञ उपनिषद 6:2:1)

वह केवल एक है, किसी अन्य के बिना।

(राधाकिर्शनन पेज. 447–448)

NA KASYA KASIJ JANITA NA CHADIPAH (श्वेताशवतरा उपनिषद 6 : 9)

न ही उसके माता पिता हैं और न ही उसका कोई ईश्वरं (राधाकिर्शनन पेज. 745)

NA TASYA PRATIMA ASTI (श्वेताशवतरा उपनिषद 4 :9)

ईश्वर की कोई प्रतिमा (मूर्ति, आकार, तस्वीर) नहीं।

यो मामज मनादि च वेत्ति लोक – महेश्र्रम अ संमूढः स मर्त्येषु

सर्व–पापैः प्रमुच्यते (10 / 3 विभूती योग भगवत गीता)

जो व्यक्ति यह जानता है, कि मैं अजन्मा, अनादि और लोकों का सबसे बडा स्वामी हूँ, वही व्यक्ति मोह रहित है। और सब पापों से मुक्त है।

कामैस्तैस्ते हृतज्ञानाः प्रपद्यन्ते न्यदेवताः तं तं नियम मास्थाम प्रकृतया नियताः स्वाया (7 / 20 ज्ञान विज्ञान योग भगवत गीता)

लेकिन जिन लोगों के मन उनके इच्छाओं के कारण बिगड़ गए हैं वे अपने – अपने स्वभाव के कारण तरह–तरह नियमों का पालन करते हुए दूसरे देवताओं की शरण में जाते हैं।

नोटः– ऊपर के श्लोकों से मालूम हुआ ईश्वर अजन्मा और निराकार और अमर है। इस से मालूम हुआ ईश्वर इन्सान का रूप धारण नहीं करता अर्थात उसके अवतार इन्सान होते हैं न कि खुद ईश्वर।

और हमाको यह भी सोचना है सारी सृष्टी में सबसे ज्ञान वान इन्सान है पर यह इन्सान अपने से तुच्छ, बेअक्ल और बेजानदार पत्थर और मिटट्‌ी को पूज रहा है। और इन सारी चीजों के बनाने वाले सच्चे ईश्वर को भूल बैठा है। एक अवतार के बाद दूसरा अवतार शौकिया नही आता, आता तब है जब ईश्वरीय शिक्षाएँ बदल दी जाती हैं।

पुनर्जन्म की हक़ीकत

वेदों में पुनर्जन्म नहीं है। सिर्फ एक जन्म की बात कही गई है। आओ इस पर रिसर्च करें यह एक सच्चाई है या एक गलत धारणा मरने के बाद एक जन्म है न कि कई जन्म है।

1. आदमी इस सृष्टी में सबसे ज़्यादा श्रेष्ठ और अशरफुल मख्लूकात है पुनर्जन्म के मुताबिक इन्सान बुरे कर्म करता है तो कुत्ते या जानवर की योनि में जन्म लेता है। सोचने की बात यह है कि जो इन्सान सच्चाई न पा सका और बुराई के मार्ग पर चला उससे यह आशा कैसे की जा सकती है कि जब वो कुत्ता, ऊँट, गधा बनकर जन्म लेगा तो वह कौन से शास्त्र या धार्मिक किताबें पढ़कर सत्य को पा लेगा और भलाई करके उच्च कोटि की श्रेणी में आ सकेगा।

2. आज सारी दुनिया में पाप और गुनाह बढ़ रहे हैं। तो पुनर्जन्म के अनुसार जानवरों की तादाद बढ़ना चाहिये, फिर क्यों सारी दुनिया में इन्सानों की तादाद (POPULATION)बढ़ रही है?

3. पहले मानव की रचना हुई जो श्रेष्ठ या अशरफ है या वनस्पति या पशु की, इन्सान को तो यह भी नही पता कि किस कर्म की वजह से इन्सान में औरतें तथा किस कर्म की वजह से आदमी जन्म लेते हैं।

4. दण्ड या सज़ा के लिये इन्साफ की बात यह है कि अपराधी को यह बात पता हो उसने पिछले जन्म में क्या बुराई की थी। जिनके कारण उसे सज़ा मिल रही है। किन्तु जानवरों और पोधों को तो छोड़िये इन्सान को भी नहीं पता कि पिछले जन्म में क्या पाप और क्या नेकी की है। अगर इन्सान को पाप और पुण्य की सज़ा यही दुनिया में मिल जाती है। तो ईश्वर ने स्वर्ग और नर्क क्यों पैदा किए है।

5. यदि वनस्पति और जानवरों की पैदावार बुरे कर्मों या गुनाहों की वजह से होती है तो बुराई को धन्यवाद देना चाहिये। क्योंकि उसी की वजह से आहार, खाना--पानी मिल रहा है। अगर हम चाहते है कि हमें खाना--पानी ज़्यादा उपलब्ध हो सके तथा दुध की नदियां बहे तो पाप को बढ़ावा देना चाहिये।

पुनर्जन्म का प्रभाव मानव जीवन पर

1. जब एक व्यक्ति दुखी और पीड़ित तथा भूखा प्यासा है तो हमें उसकी मदद नहीं करनी चाहिये क्योंकि वो अपने कर्मों का फल पा रहा है।

2. हिन्दु धर्म के अनुसार गूँगे, कोढ़ी, बौने, नीच वंश वाले तथा जनेऊ न धारण करने वाले, ब्राहम्ण अगर अशिक्षित हो तो दान नहीं देना चाहिये। (शान्ति पर्व 36,38,39)।

3. पुनर्जन्म की धारण से नैतिकता खत्म हो जाएगी यहा इन्सान मर--मर कर जन्म ही लेता रहेगा। तब तो ईश्वर पर आस्था ही खत्म हो जाएगी। इसलिये कि इन्सान कि पैदावार कर्मों से होती है न की ईश्वर पैदा करता है। इस बात से ईश्वर से पूरी तरह आस्ता खत्म हो जाएगी।

4. पुनर्जन्म की भावना भेदभाव पैदा करेगी कुछ जन्मजात अच्छे कुछ पापी समझे जायगें। और यह घमंड और अहंकार को बल देगा जिनके पास माल दौलत है। वो पिछले कर्मों को फल मानेगा और गरीब, दुखी और परेशान इन्सान को उपेक्षा की नज़र से देखेगा।

5. पुनर्जन्म गरीबों में हीनता और भेदभाव करेगी कुछ जन्मजात अच्छे कुछ पापी समझें जायगें। और इन्सानों के बीच नफरत की लकीर पैदा हो जायगी।

हजरत मोहम्मद (सल.) और भारतीय धर्मग्रन्थ

भविष्य पुराण और हजरत मोहम्मद सल. (कल्कि अवतार)

लिंड़गच्छेदी शिखाहीन : श्मश्रुधारी स दूषकः।

उच्चालापी सर्वभक्षी भविष्यति जनो मंम। 25

बिना कौल च पशवस्तेषां भक्षया मता मम मुसलेनैव संस्कारः कुशैरिव भविश्यति। 26

तस्मान्मुसलवन्तो हि जातयो धर्मदूषकाः। इति पैशाचधर्मश्च भविष्यति मया कृत! 27

(भविष्य पुराण पर्व -- 3 खण्ड -- 3 अध्याय -- 1 श्लोक 25--26--27)

हमारे लोगों का खतना होगा, वे शिखाहीन (बिना चोटी) होंगे वे दाढ़ी रखेंगे ऊँचे स्वर में आलाप करेंगे यानी अजान देंगे।

शाकाहारी मांसाहारी (दोनों) होंगे किन्तु उनके लिए बिना कौल यानी मंत्र से पवित्र किए बिना कोई पशु भक्ष्य (खाने) योग्य नहीं होगा (वे हलाल मांस खायेंगे) इस प्रकार हमारे मत अनुसार हमारे मानने वालों का मुस्लिम संस्कार होगा उन्ही से मुसलवन्त यानी मुस्लिम निष्ठावानों का धर्म फेलेगा और पैशाचधर्म (शैतान द्वारा गुमराह करके चलाया गया धर्म अनेकेश्वरवाद) मिट जायेगा।

एतस्मिन्नन्तिरे म्लेच्छ आचार्यर्येण समन्वितः।1

महामद इति ख्यातः शिष्यशाखासमन्वितः 5

नृपश्चैव महादेवं मरूस्थलनिवासिनम। 6

आने वाले समय में म्लेच्छ (विदेशी) आचार्य जो महामद इति ख्यातः अर्थात महामद नाम से जाना जायेगा तथा मरूस्थलनिवासिनम अर्थात मरूस्थल या रेगिस्तान में निवास करने वाला होगा।

जरूरी सवाल और जवाब

सवाल नं. 1:- अल्लाह दिखाई क्यों नहीं देता ?

जवाब नं. 1:- इस कायनात (सृष्टी) में हर चीज LIMITED सीमित है इन्सान भी, और अल्लाह UNLIMITED है तो LIMITED चीज UNLIMITED को कैसे देख सकती है। आओ अल्लाह ही से इसका जवाब लेते हैं। कुरआन से।

1 – निगाहें उसको नहीं पा सकती वो निगाहों को पा लेता है वह बहुत बारीकबीन (सुक्ष्मदर्शी) और बाखबर (अवगत) है। (सूरः अनआम 6: 103)

हम अल्लाह को अपनी आँख से नहीं देख पाते लेकिन वह अच्छी तरह हमें देख रहा है। कोई शख्स इस खाम ख्याली में मुब्तला न रहे कि जब खुदा दिखाई नहीं देता तो उसका अस्तित्व ही नहीं, सच्चाई यह है कि इन्सान की निगाहें खुदा को देखने की ताकत और भार को सहन नहीं कर सकतीं। इन्सान की निगाहें दुनिया की बहुत सी चीजों को देखने से (महरूम) वंचित हैं जैसे रूह, हवा, करेंट, इल्म, यह हमें दिखाई नहीं देते इसका मतलब यह नहीं कि यह चीजें नहीं होती हैं।

सोचो!

1 – क्या जिस हवा को हम सांस में लेते हैं क्या नजर आती है।

2 – क्या कोई भावनाओं (feelings) का रंग आकार तथा लम्बाई और वजन देखकर बता सकता है।

3 – नींद SLEEP का रंग रूप और वजन बता सकता है।

4 – किसी शख्स से पूछा जाए क्या आप अपनी माँ से मोहब्बत करते है। क्या आप भौतिक PHYSICALLY मोहब्बत दिखा सकते हैं। क्या मोहब्ब्त का कोई वजन बता सकता है।

कुरआन सूरः हदीद 57:3

वह सबसे पहला सबसे पिछला सब पर जाहिर और सब की निगाहों से छुपा हुआ है।

कुरआन सूरः इख्लास 112:4

और न कोई उसके बराबर का है।

नोटः– जब एक पेन बनाने वाला इन्सान पेन जैसे आकार का नहीं हो सकता तो सूरज बनाने वाला और सारी कायनात बनाने वाला अपनी बनाई हुई चीज जेसा कभी भी नहीं हो सकता इस लिए अल्लाह हमारे SENSE ORGAN से महसूस नहीं किया जा सकता है। क्यों कि वह बनी हुई चीजों जेसा नहीं।

सूरः आराफ 7:143

और जब मूसा हमारे मुकर्रर किए हुए वक्त पर (तूर) पहाड़ पर पहुँचे और उनके परवरदिगार ने उनसे कलाम किया तो कहने लगे कि ऐ रब जलवा फरमा (दर्शन दे) ताकी मैं तुझे देख सकूँ फरमाया तुम

मुझे हरगिज न देख सकोगे अलबत्ता पहाड़ की तरफ देखो अगर वह अपनी जगह ठहरा रहा तो मुझे देख सकोगे फिर जब उसके रब ने पहाड़ पर तजल्ली (आलोक) की तो उसको चूर--चूर कर दिया और मूसा बेहोश हो कर गिर पड़े जब होश में आए तो कहने लगे कि तेरी जात पाक है और मैं तेरे हुजूर में तौबा करता हूँ और जो ईमान लाने वाले हैं उनमें सबसे पहला हूँ।

नोट :-- जब पैगम्बर न देख सके अल्लाह को और इतना मजबूत पहाड़ रेजा रेजा हो गया तो यह नरम गोशत और आँखें अल्लाह को बर्दाशत कर पायेंगी तो यह इन्सान इस दुनिया में अल्लाह को नहीं देख सकता।

दुनिया तकलीफ और इम्तिहान की जगह

1 – अगर हम गौर फिक्र करें कि अल्लाह आखिर नज़र क्यों नहीं आता क्योंकी यह दुनिया तकलीफ और इम्तिहान की जगह है। अल्लाह ने इन्सानों को अपनी इबादत और इम्तिहान के लिए पैदा किया की कौन आमालों (कर्मों) के एतबार से अच्छा है।

2 – जब वो अल्लाह को अपनी आँखों से देख लेगा तो वो अल्लाह पर ईमान ले आएगा और अच्छे अमाल ही करेगा, तो यहाँ अगर अल्लाह नजर आ जाए तो इम्तिहान का मकसद ही खत्म। इसी तरह जो इन्सान अल्लाह को नहीं मानते वो अल्लाह के हुक्म और उसके बताये हुए रास्ते पर क्यों चलेगा। इस लिये यह सारी दुनिया परीक्षास्थल है। 3. दुनिया इम्तिहान की जगह है। कि कौन

अल[illegible] को बगैर देखे मानता है और कौन नही। 4. जो देखने की जिद [illegible]ते है, वो दुनिया में गुनाह करते रहते हैं, कि अल्लाह नजर नह[illegible]ाता और अल्लाह पर ईमान नहीं लाते।

तो कोई इस दुनिया में अल्लाह के बराबर का न ही विरोधी OPPOSITE

एक और मकसद है कि अल्लाह दिखाई क्यों नहीं देता क्योंकी इन्सान किसी भी चीज के वजूद (अस्तित्व) को दो तरीके से पहचानता है। जैसे !

1 – अगर सर्दी न हो तो गर्मी की हकीकत नहीं पहचान सकते ।

2 – अगर कड़वी चीज न हो तो हम मिठास की हकीकत नहीं पहचान सकते।

3 – अगर अंधेरा न हो तो हम रौशनी की हकीकत नहीं पहचान सकते।

इसी तरह तुम किसी को किसी चीज (OBJECT) के बारे में ज्ञान या इल्म देते हो जिसको उस ने नहीं देखा तो वो तर्क और दलीलें ला कर उसके वजूद (अस्तित्व) को सवाल करके पूछता है। वह कैसा और किस तरीके का दिखता है। दो तरीके हैं किसी चीज (OBJECT) को पहचानने के।

1 – पहली बात यह कि क्या इस सारी दुनिया में कोई भी चीज अल्लाह के बराबर की या उस जैसी नहीं। सारी जाँच पड़ताल के

बाद पता चला कि हर बनी चीज बनाने वाले के बराबर की नहीं हो सकती क्योंकी वो तो मोहताज होती है बनाने वाले की।

2 – और न ही उसकी कोई उसकी विरोधी (OPPOSITE) जैसे गर्मी न हो तो सर्दी की हकीकत को नहीं पहचाना जा सकता।

इस लिये इन्सान के लिये नामुमकिन है कि वह अल्लाह को देख सके या उसका तसव्वुर (IMAGINE) कर सके क्योंकी वह (SENSE ORGAN) इन्द्रियों के गिरफत में नहीं आ सकता क्योंकी न ही कोई चीज उसके बराबर की है। और न कोई उसकी विरोधी (OPPOSITE) इसलिए हम उसे नहीं देख सकते।

हदीस बुखारी किताब नं1 हदीस नं. 7380 बाबुत्तौहीद

मसरूक फरमाते हैं हजरत आयशा रजी. अन्हा कहती हैं अगर कोई कहता है कि मोहम्मद स.अ.व. ने अल्लाह को देखा है वह झूठा है। क्योंकी अल्लाह तआला फरमाते हैं हमारी आँखें उसको नहीं देख सकती (सूरः अनआम 6 : 103)

और यदि कोई कहता है कि मोहम्मद स.अ.व. गैब (UNSEEN) जानते थे वह झूठा है। अल्लाह कहता है कि कोई गैब का इल्म नहीं रखता लेकिन अल्लाह की जात गैब जानती है।

जन्नत की सबसे बड़ी नेअमत अल्लाह का दीदार (दर्शन)

हदीस बुखारी हदीस नं. 7435 बाबुत्तौहीद

जरीर बिन अब्दुल्लाह रजी. अन्हुमा फरमाते हैं मोहम्मद स.अ.व. ने

फरमाया तुम जरूर तुम्हारे रब (अल्लाह) को देखोगे अपनी आँखों से।

कुरआन सूरः कियामः 75:22-23

उस दिन बहुत से मुँह रौनकदार होंगे 22

और अपने परवरदिगार का दीदार (दर्शन) कर रहे होंगे 23

हदीस बुखारी हदीस नं. 7436 बाबुत्तौहीद

जरीर बिन अब्दुल्लाह रजी. अन्हुमा फरमाते हैं मोहम्मद स.अ.व. बाहर आये हम लोगों के पास चौदहवीं रात में (FULL MOON NIGHT) और कहा तुम देखोगे अपने रब को कियामत के दिन जिस तरह तुम पूरे चाँद (FULL MOON) को देखने में तुम्हें कोई तकलीफ नहीं होती।

नोट :– अल्लाह अर्श पर है आसमानों में, उसके सिफात (गुण) सारी दुनिया पर हावी हैं। हर जगह उसके गुण फैले हैं। इस दुनिया की हर चीज LIMITED है आँख की ताकत भी LIMITED है। LIMITED चीज़े, LIMITED आखों से देखी जा सकती है। पर अल्लाह (UNLIMITED) और पावरफुल है। अगर हमने देखने की कोशिश की तो भस्म हो जायेगें। पर ईमान वाले जन्नत में दर्शन करेगें।

सवाल नं.2:– दुनिया में इतने धर्म हैं कौन सच्चा और कौन गलत सच्चाई से जवाब दें ?

जवाब नं. 2 :– सारे इन्सान एक आदम और हव्वा की औलाद हैं तो हमारी जाती एक हुई एक ही पैदा करने वाला अर्थात उसी की इबादत या पूजा की जाए।

लोगों हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम्हारी कौम और क़बीले बनाए ताकि एक दूसरे की पहचान करो और अल्लाह के नज़दीक तुम में सबसे ज्यादा इज्जत वाला वह है जो ज्यादा परहेज़गार (अल्लाह से ड़रने वाला) है बेशक अल्लाह सब कुछ जानने वाला और खबरदार है। (सूरः हुजरात 49:13)

नोट :– भेदभाव नस्ल, रंग जात–जबान और देश के आधार पर बनाए और फैलाए जाते हैं। और यही बात नफरत पैदा करती है। हमारे माँ बाप एक हैं जात–पात का कोई भेदभाव नहीं एक ही जाती है। सारी जमीन उसी एक अल्लाह (ईश्वर) की है। उसी की तरफ पलट कर जाना है। तो हमें उसी की इबादत करनी चाहिए और परहेज़गार बनना चाहिए।

उरूज नस्ल व नसब पर गुरूर बे माने।
आमाल तुलेंगा कयामत में खानदान नहीं।

मुस्नद अहमद 22:288

अल्लाह नें इस ज़मीन पर 1 लाख 24 हज़ार पैगम्बर भेजे हैं। 25 पैगम्बरों के नाम कुरआन में दिये गये हैं। हर पैगम्बर अपनी बस्ती और इलाके के लिए आया एक पैगम्बर की मौत हो जाने पर

दूसरा पैगम्बर अल्लाह भेजता था। अब पता यह चला कि एक पैगम्बर के बाद दूसरा पैगम्बर शौकिया नहीं आता था बल्कि जरूरत (आवश्यकता) के अनुसार आता था जब पैगम्बर को मौत आ जाती तो ये धर्म के ठेकेदार या अपनी मनमानी करने वालें धार्मिक गुरू ईश्वरयि ग्रन्थ (आसमानी किताब) को अपने फायदे के लिए बदल डालते थे। और लोग अल्लाह को छोड़ कर मूर्तियों, कब्रों, और इन धार्मिक गुरूओं को पूजने लगते थे आओ हम गौर करें!

हिन्दु धर्म में श्रुति को ईश्वरी ग्रन्थ कहा गया है वेद उपनिषद और पुराण को ईश्वरीय ग्रन्थ कहा जाता है इनमें भी बदलाव आया और धार्मिक गुरूओं ने एक निराकर ईश्वर को आकार देकर पत्थर, मुर्ती, और जानवरों को पूजा जाने लगा, और सच्चे ईश्वर को लोग भूल गये। अगर राम जी की शिक्षाएं सही हालत में होतीं तो श्रीकृष्ण को आने की आवयश्कता ही नहीं होती और फिर वेद और भविष्यपुराण कलकी अवतार मोहम्मद स.अ.व. के बारे में कहती है यह अन्तिम अवतार सच्चे धर्म का प्रचार करेगा जो कलयुग में आयेगा। एक एक सच्चे हिन्दु को भविष्यपुराण पढ लेने के बाद इस सच्चाई को मान लेना चाहिये नहीं तो वह हिन्दु ही नहीं।

यहूदी और ईसाई क्यों गुमराह हुये उसका कारण कुरआन ने बताया है।

पैगम्बर मूसा यहूदीयों (JEWS) पर, और ईसा ईसाईयों पर

पैगम्बर बना कर भेजे गए मूसा अलै. को तौरात और ईसा अलै. को इंजील नामक किताबें दी गईं। आओ कुरआन से जवाब लें कि यह लोग क्यों गुमराह हुए।

सूरःतोबा 9:31

इन्होने अल्लाह को छोड़ कर अपने धर्म गुरू और संतों (उलमा और मशाइख) को रब (खुदा) बना लिया है, और मसीह मरियम के बेटे को भी, हालांकि उन्हें केवल एक अल्लाह (माबूद) की इबादत का हुक्म दिया गया था वह जिस के सिवा कोई खुदा नहीं, पाक है वह (अल्लाह) उस शिर्क से जो ये करते हैं।

सूरः तौबा 9:34

ऐ ईमान वालों ! अहले किताब (यहूदी–ईसाई) के धर्म गुरू पंडितों और संतों में बहुत से लोग ऐसे है जो लोगों का माल गलत तरीके से खाते हैं, और अल्लाह की राह से रोकते हैं, और जो लोग सोना चाँदी जमा करते हैं, और उसको खुदा की राह में खर्च नहीं करते उनको उस दिन की दर्दनाक अज़ाब की खुशखबरी सुना दो।

हिन्दु धर्म व ईसाई व यहूदी धर्म और दूसरे धर्म उस वक्त के लिए थे उन लोगों के लिये। और अब उनकी धार्मिक किताबें सही हालत पर सुरक्षित नहीं हैं। आज BIBLE OLD और NEW TESTAMENT 66 BOOKS में तब्दील हो चुकी है।

बेशक यह किताब (कुरआन) हम ने ही उतारी है और हम ही उसके हिफाजत करने वाले हैं

जरूरी बात यह है कि मोहम्मद स.अ.व. को सारी इन्सानियत के लिये और कियामत तक के लिये पैगम्बर बना दिया गया है। अब कोई नया पैगम्बर नहीं आने वाला। कुरआन और मोहम्मद स.अ.व. की जिन्दगी पूर्ण जीवन व्यवस्था है, और एक पूर्ण COMPLETE जिन्दगी गुजारने का तरीका है।

और (ऐ मोहम्मद !) हम ने तुमको तमाम दुनिया के लिये रहमत बना कर भेजा है। (सूरः अंबिया 21:107)

आज सारी दुनिया में सबसे तेजी से फैलने वाला धर्म अमेरिका, इंग्लेंड, जर्मनी, जिसमें 60% औरते। और 40% आदमी इस धर्म को स्वीकार कर रहे हैं। क्यों, क्योंकी यह बदन और आत्मा दोनों की जरूरत पूरी करता हैं और दिल व दिमाग को सुकून देता है और स्वर्ग और नर्क का रास्ता बता देने वाला धर्म है।

कुरआन किसी पर जबरजस्ती नहीं करता यह नसीहत है सारे इन्सानों के लिए।

इस्लाम धर्म में जबरदस्ती नहीं है हिदायत (साफ तौर पर) जाहिर और गुमराही से अलग हो चुकी है तो जो शख्स मूर्ती पूजा न करे और अल्लाह पर ईमान लाए उसने ऐसी मज़बूत रस्सी हाथ में पकड रखी है जो कभी टूटने वाली नहीं और अल्लाह सब कुछ सुनता और जानता है। (सूरः बकर 2 : 256)

जो लोग ईमान लाये हैं उनका दोस्त खुदा है उनको अंधेरे से निकाल कर रोशनी में ले जाता है, और जो इन्कारी हैं उनके दोस्त

शैतान हैं कि उनको रोशनी से निकाल कर अंधेरे में ले जाते है, यही लोग नर्क में जोने वाले है कि हमेशा उसमें रहेंगे। (सूरः बकर : 2 : 257)

सवाल नं.3 इस्लाम में सबसे मुश्किल अमल कौन सा है। और कैसे ?

जवाब नं़ 3 :–

1. इख्लास SINCERITY (पूरी ईमानदारी) सच्चाई से वह अमल (कर्म) करना जिस तरीके से अल्लाह ने कुरआन में और मोहम्मद स0अ0व0 के तरीके से करने का हुक्म दिया है।

2. अमल या कर्म करने से पहले करते वक्त और करने के बाद कोई दिखावा कोई एहसान कोई बढ़ावा न दिखाया जाए सिर्फ अल्लाह को राजी करने के लिए किया जाए वरना यह इन्सान कियामत के दिन नुकसान उठाने वालों में से होगा।

3. अगर अमल पूरे इख्लास के साथ किया गया और रसूल के तरीके पर भी किया गया मगर रोज़ी हलाल की न हो तो भी अमल कूबुल नही किया जायगा। "ऐ पेंगम्बर पाकीजा चीजें खाओ और सालेह अमल (नेक अमल) करो जो अमल तुम करते हो में उनको जानता हूँ (कुराआन: 23:51)

नोट :– इस आयत मेंबताया गया है अगर तुम्हारी रोजी हलाल की नहीं (पाकीज़ा नहीं) तो अमल सालेह पाकीज़ा नहीं बन सकती इस लिये हलाल रोज़ी कमाना हर मुसलमान पर फर्ज़ है। और अमल के

कबूलियत की शर्त भी हैं। झुठ बोलकर और सूद ब्याज के माल से रोज़ी कमाने वालों का अमल कबूल नहीं होगा। अच्छी नियत (GOOD INTENTION) और निष्ठा (SINCERITY) के साथ जो भी मज़हबी काम किया जाता है वह सही होता है उसे खुदा कबूल करता है।

यह सोच गलत है अच्छी नियत और इख्लास (निष्ठा) किसी गलत काम को सही नहीं बनाते। किसी मजहबी काम का करना कब व कैसे सही होता है और कब व कैसे गलत इस बात का फैसला सिर्फ मज़हब करता है। न कि गलत या सही नियत मतलब अमल अगर अल्लाह रसूल के तरीके पर हो तब हमें सही नियत करना चाहिये हमें अमल करने से पहले उसे ठोंक बजा कर देख लेना चाहिए वरना नाकामी हाथ लगेगी। चाहे नियत कितनी अच्छी हों।

सुरः बकरः 2 : 264 – बेहतरीन मिसाल

ऐ ईमान वालो ! एहसान जताकर और दिल दुखाकर अपने सदकों (दान) को उस शख्स की तरह बरबाद न करो जो अपना माल लोगों को दिखाने के लिये खर्च करता है और अल्लाह व आखिरत के दिन पर ईमान नहीं रखता। उसकी मिसाल ऐसे है। जैसे एक चट्टान जिस पर कुछ मिट्टी जमी हुई थी उस पर जब ज़ोर का बादल बरसा तो वो साफ चट्टान रह गई। ये लोग अपने आमाल का कुछ भी बदला हासिल नहीं कर सकेंगे और खुदा ऐसे ना शुक्रों को हिदायत (सीधा रास्ता नहीं दिखाता) नहीं दिया करता।

"इख्लास SINCERITY चार चीजों से खराब हो जाती है।

1– गुनाह :– बड़े हों या छोटे इन्सान के इख्लास को और इन्सान के बदन को दोनो को कमजोर कर देते है।

उनके दरवाजे दीन में लाइल्मी, शक व शुब्हात, शहवत मन की न खत्म होने वाले ख्वाहिशें, दुनिया का माल इकट्ठा करके सबसे ज्यादा मालदार बनने की कोशिश, मोहम्मद स0अ0व0 ने फरमाया इन्सान की ख्वाहिशें कभी भी खत्म नहीं हो सकतीं यहा तक की कब्र की मिटटी ही उसका पेट भर सकती है।

2– शिर्क और बिदअत :– अल्लाह के अधिकार मख्लूक को देना शिर्क है, और मोहम्मद स0अ0व0 के अधिकार किसी बजुर्ग या इन्सान या मरे हुए लोगों को देना यह बिदअत है। यह दोनों अमल नर्क या जहन्नम में ले जाने वाले हैं। इख्लास को पारा पारा कर देने वाले हैं।

3– रियाकरी, दिखावा (SHOWING OFF) छुपा हुआ शिर्क हदीस मुस्लिम शरीफ किताबुल इमारा हदीस नं. 1905

1– हज़रत अबुहुरैरह ने कहा मैने रसूल स0अ0व0 को यह फरमाते हुए सुना कि कियामत के दिन ऐसे शख्स के खिलाफ फैसला सुनाया जायेगा जिसने शहादत पाई होगी उसे खुदा के अदालत में हाजिर किया जायेगा फिर खुदा उसे अपनी सारी नेअमतें याद दिलाएगा और उसे वह सब नेमते याद आ जायगीं तब पूछागा की

मेरी नेमते पा कर क्या किया? तो इन्सान कहेगा तेरे दीन के लिए जान दे दी खुदा उससे कहेगा तुने यह बात गलत कही कि मेरे रास्ते में कुर्बानी दी बल्कि लोग तुझे बहादुर कहें तो दुनिया में तुझे उसका बदला मिल गया, और दीन के आलिम और बहुत मालदार शख्स इनको भी अल्लाह अपनी नेमते गिनवाएगा फिर पूछेगा तुमने क्या किया तो यह कहेंगे दीन का इल्म हासिल किया और दूसरों तक पहुंचाया। दूसरा कहेगा जो माल तूने दिया वो मैनें गरीबों में बॉटा अल्लाह कहेगा कि तुमने इसलिए किया कि तुझे बड़ा आलिम कहा जाये और दुसरे को सखी दानवीर कहा जाये वो कहा जा चुका फिर इन दानों को मुँह के बल घसीटकर जहन्नम में डाल दिया जाएगा।

2– नुक्ताचीनी या बेइज्जती का डर (FEAR OF CRITICISM)

जो लोग बुराईयों में और बुरी सोहबत और बुरे दोस्तों के साथ होते हैं वो अल्लाह के हुक्म को छोड़ देते हैं कि अगर मैने दीन पर अमल किया तो लोग बेइज्जती करेंगे की बड़ा दीनदार बन रहा है। बुरे काम हमारे साथ करता है, और दिखवा दीन का कर रहा है।

3– कुछ लोग इस्लाम के कुछ हुक्मों को मानते हैं अमल भी करते हैं पर अल्लाह के लिए नहीं बल्कि लागों के नुक्ताचीनी से बचने के लिये, अगर यह अमल नहीं क्या तो लोग क्या कहेंगे। जैसे एक शख्स मस्जिद में पाँचों वक्त की नमाज़ अदा करता है पर अल्लाह

के लिये नहीं बल्कि लोग कहीं उस पर बेनमाजी का फतवा न लगा दें वो लोगों से डर कर अमल करता है अल्लाह के लिये नहीं

4– कुछ नादान इन्सान अपने और अपने पास नेअमतों की तारीफ दूसरों को ज़लील करने के लिये करते हैं। माल, औलाद, खूबसूरती, इज्जत ऐ चीजें अल्लाह की देन हैं आजमाईश के लिए दी गई हैं दूसरों को ज़लील और नीचा दिखाने के लिये नहीं। कुछ औरतें शादियों में कपड़ों और ज़ेवरो की नुमाइश करती हैं और सज धज कर निकलती हैं और अपनी खूबसूरती की नुमाइश करती हैं और खुशबू लगा कर निकलती हैं ऐसी औरतें जन्नत की खुशबू भी सूँघ नहीं पायेंगी वह सब अलामतें रियाकारी की हैं जो सारे आमाल बर्बाद करने वाली हैं।

4– निफ़ाक (HYPOCRACY)

एक ऐसी बीमारी है जो जहन्नम के सबसे निचले वाले तब्के में ले जाने वाली है। जहाँ सबसे ज्यादा अज़ाब होगा। मुनाफ़िक उस शख्स को कहा जाता है जो मुँह से तो अपने आप को मुसलमान कहता है और दिल में मुसलमानों की दुशमनी और कुफ्र रखता है। मुनाफिक लोग नमाज़ पाबंदी से पढ़ते थे रोजे भी रखते थे ज़कात भी अदा करते थे यह सब कुछ अल्लाह के लिये नहीं दिखावे के लिए, और मुसलमानों के राज़दार बनकर काफिरों को बता कर फ़साद करवाना चाहते थे यानी गीबत और लड़ाई झगड़े करवाने के ताक में रहते थे।

सूरः निसा 4 :145

कुछ शक नहीं की मुनाफ़िक लोग दोज़ख के सबसे नीचे के दर्जे में होंगे और तुम उनका किसी को मददगार नहीं पाओगे।

सच्चे इख्लास की अलामतें

1– सही इख्लास (निष्ठा) वाला इन्सान किसी से दोस्ती करता है तो अल्लाह के लिये और दुशमनी वो भी अल्लाह के लिये।

2– सही इख्लास (निष्ठा) वाला इन्सान हर अमल छुपाकर बिना दिखवे के करता है। सिर्फ अल्लाह को राज़ी करने के लिये।

इलाजे रियाकारी

1– इल्म हासिल करो :– 1. कुरआन, हदीस और सहाबा की जिन्दगी का, इल्म (क्योकि इल्म) ईमान का भी रहनुमा है और अमल का भी।

2– दुआ :– रियाकारी से बचने की दुआ अल्लाह से मांगना है।

3– इस्तेकामत :– मजबूती से जमना और अपनी इस्लाह करना और दूसरो को दावत देना हमारे अन्दर बदलाव ला सकता है।

सल्फे स्वालेहीन के अक़्वाल

1– **यअकूब अल मकफूफ** : सही इख्लास (निष्ठा) वाला इन्सान वो है जो अपने अच्छे आमालों (कर्मों) को छुपाता है जिस प्रकार वो अपने बुरे आमालों को छुपाता है।

2- अस - सूसी : अल्लाह अपने बन्दों के आमाल में इख्लास देखता है, और कुछ नहीं।

3- अली रजी0 अन्हू : तीन अलातमें हैं रियाकारी की एकः शख्स जब अकेला हो तो सुस्ती दिखाए। दोः जब दुनिया के जिन्दगी में हो दूसरों के साथ तो जानदार हंसता खेलता नजर आए। तीनः जब उसकी तारीफें की जाएं नेक अमल बढ़ा दे जब तन्कीद CRITCIZE किया जाए तो नेक काम कम कर दे।

4- सहल बिन अब्दुल्लाह : इन्सान की रूह आत्मा (SOUL) पर अगर सबसे मुश्किल कोई चीज हासिल करना है तो इख्लास (निष्ठा) है। कई बार कोशिश की के कामों में दिखावा न हो पर रियाकारी ज़ाहिर हो जाती है अलग-अलग रंगों में।

इब्ने कुदामा (मिन्हाजुल कासेदीन):

बेशक सारी इन्सानियत खसारे और नुकसान में है उनको छोड़ कर जो दीन का इल्म रखते हैं। और वो सब भी खसारे और नुकसान में होंगे जिन्हों ने उस पर अमल नही किया और वह सब भी खसारे में होंगे जिनके अमल इख्लास के साथ अल्लाह के लिए नहीं थे तो सारी मेहनत पर पानी फिर जायेगा रियाकारी की वजह से।

बेहतरीन नसीहत : दीन के आलिम बनो अगर आलिम नहीं बन तो तालिबे इल्म (STUDENT) बनो अगर तालिबे इल्म भी नहीं बन सकते तो सुनने वाले बनो और सुनने वाले भी नही बन सकते तो

ऐसे लोगों को सीधा रास्ता नहीं मिलता।

सवाल नं. 4 :- अल्लाह (ईश्वर) नें मरने के बाद की जिन्दगी और भविष्य (FUTURE) गैब में क्यो छुपाया ?

जवाब नं. 4:- इन्सान की बड़ी ख्वाहिश है कि गैब में छुपी हुई चीजों को जो मुस्तकबिल (FUTURE) में होने वाली है उसे जान ले। यह एक बहुत बड़ी कमज़ोरी है इन्सान की यही कमजोरी इन्सानों को कुफ्र और शिर्क करवाती है और अल्लाह के रास्ते और सच्चे अक़ीदे से दूर कर देती है। और इन्सान तकदीर की हकीकत से भी दूर हो जाता है। ये नीचे दी गई कुछ चींजे हैं जो गुमराही का सबब हैं।

1. SOOTHSAYER ज्योतिषी, भविष्य वक्ता या मुस्तकबिल बताने वाला।

2. ASTROLOGERS वह भविष्य वक्ता या मुस्तकबिल बताने वाले जो तारों की देख कर POSITION भविष्य या इन्सानों की तक़दीर बताते हैं कि तारों का घूमना तक़दीर हैं।

3. PALMISTRY हस्तरेखा विज्ञान, हाथों की लकीरें देख कर इन्सान का भविष्य या मुस्तकबिल बताने वाला।

4. NUMEROLOGY अंकविद्या, नम्बरों का इस्तेमाल करके कहते हैं कि भविष्य या मुस्तकबिल में यह नम्बर तुम्हारे लिए LUCKY है या अच्छा है।

आओ गौर फिक्र करें

जमीन में अधिकतर लोग ऐसे हैं अगर तुम उनके कहने पर चले तो वे अल्लाह के मार्ग से तुम्हें भटका देंगे वे तो केवल अटकल के पीछे चलते हैं, और वह सिर्फ अटकल ही दौड़ाते हैं। (सूः अनआम 6: 116)

और उनमें के अक्सर सिर्फ अटकल की पैरवी करते हैं और कुछ शक नहीं अटकल सच्चाई को कुछ भी दूर नहीं कर सकती बेशक अल्लाह तआला तुम्हारे तमाम कामों को जानता हैं (सूरः यूनुस 10 : 36)

सोचो ! – बेजुबान जानवर तथा तोतो से ज्योतषी कार्ड उठवाते हैं क्या बेजुबान पक्षी हमारी तकदीर जानता है। अल्लाह की लिखी तकदीर पंक्षी बतायेगा।

नोट :– हाथों की लकीरों पर मत जाओ दोस्तों तकदीर उनकी भी होती है जिनके हाथ नहीं होते।

जो चीजें आसमानों में हैं और जो चीजें जमीनों में हैं (सब) खुदा की तस्बीह करती हैं और वह गालिब हिकमत वाला है। (सूरः यासीन 36 : 40)

सूरज, चाँद, सितारे, पहले ही से अल्लाह की इबादत तस्बीह और COMMAND में हैं। अपनी AXIS में घूम रहे हैं। जो NONLIVING है। सारी GALAXIES (ANTICOCKWISE)

घूम रही है क्यों ? काबे का तवाफ भी (ANTICLOCKWISE) होता है। पृथ्वी, चाँद, सितारे, सूरज अगर अपनी। AXIS पर घूमने की वजह से दिन और रात का होना मौसम का बदलना मौसम के बदलने से मौसमी सब्जियां, और तरकारियां और फलों गल्लों का उगना यह सब चीजें पहले से अल्लाह के पूजा में लगी हुई है तो वह दूसरों की तकदीर कैसे बता सकती है। बनी हुई चीजें बनाने वाले की मोहताज होती है मोहताज चीजें काम दिया करती हैं जब उनसे काम लिया जाता है वह काम लिया नहीं करतीं क्योंकी वह बनाने वाले अल्लाह या ईश्वर की मोहताज होती है। इसलिये हम इस्लाम में किसी भी मोहताज चीज की इबादत नही करते।

नोट :– ये सितारे और दुनिया की बनी चीजें। अल्लाह की मोहताज है मोहताज चीजें हमारी तकदीर को नहीं बदल सकती हैं। अल्लाह जिसने तकदीर को पैदा किया और जो तकदीर का मालिक है वही बदल सकता है। सारी सृष्टी पहले से ही ईश्वर या अल्लाह की पूजा या इबादत में लगी है। हमारे पैदा होने के हजारों साल पहले से सूरज, पृथ्वी, चाँद सब अपने AXIS पर चक्कर लगा रहे है। यही उनकी पूजा है।

सूरः लुकमान 31:34

बेशक अल्लह तआला ही के पास कयामत (महाप्रलय) का इल्म है वही बारिश नाजिल फरमाता है और माँ के पेट में जो है उसे जानता है कोई भी नहीं जानता कि कल क्या कुछ करेगा न किसी को यह मालूम है कि किस जमीन में मरेगा। याद रखो अल्लह ही पूरे इल्म (ज्ञान) वाला और सही खबर रखने वाला है।

नोट :– यह दुनिया इम्तिहान की जगह है इस लिए अखिरी फैसला या RESULT छुपा लिया गया है। और फैसला गैब में रखना यह अल्लह का कानून है जो इन्सान के लिये बहुत बेहतर है आओ इस पर गौर करें !

1 – अगर माँ बाप को मालूम हो जाये उनका प्यारा बच्चा 10 साल बाद मर जायेगा तो वो बहुत बड़ी दिमागी परेशानी (Psychoiogical break down) में पड़ जायेंगे।

2 – अगर इन्सान को गैब का इल्म हो गया तो इन्सान पर मुस्तकबिल (FUTURE) का इल्म होने का इतना बोझ होगा की अमल (कर्म) करने में डरेगा और जिन्दगी गुज़ारना मुश्किल हो जायेगा

3 – इन्सानों की जिन्दगी दो दायरों से गुजरती है डर या उम्मीद वो या तो अल्लाह से डरकर या उम्मीद रखकर अमल अंजाम देता है। अगर उसकी जिन्दगी का मुस्तकबिल या FUTURE मालूम हो गया तो डर और उम्मीद का दायरा टूट जायेगा और उसका अंजाम नीचे दिया जा रहा है।

क :– जब एक मोमिन अल्लाह पर यकीन करता है और उसको यह मालूम चल जाये कि जन्नत में जाना है, तो वह अपनी इबादत और पूजा पर तकब्बुर और घमंड करेगा।

खः– अगर कोई शख्स जो बडे बडे गुनाह करता है उसे पहले ही से मालूम चल जाये कि मुझे जहन्नम (नर्क) में जाना है तो वो पूरी तरह से गुनाहों में फँस जायेगा तो भविष्य FUTURE इन्सान का छुपा (VEILED) हुआ है जो इन्सान को घमंड (तकब्बुर) और नाउम्मीदी इन दोनो बीमारियों से बचाता है और गुनहगार उम्मीद की वजह से तौबा कर लेता है, और जन्नत का हकदार बन जाता है।

मोहम्द स.अ.व. ने फरमाया जब कोई ज्योतिष या मुस्तकबिल बताने वाले से कुछ पूछता है। और उसकी बातों पर यकीन करता है तो 40 दिन उसकी नमाज़ कबूल नहीं की जाती। (मुस्लिम 2230)

मोहम्मद स.अ.व. ने फरमाया जब कोई ज्योतिष या मुस्तकबिल बताने वाले के पास जाता है और उसकी कही हुई बातों पर यकीन करता है तो उसने मोहम्मद स.अ.व. पर उतरी वही का इन्कार किया। (अबू दाऊद 3904 सहीह)

सवाल नं.5 :– क्या गलत मजहबी सोच (RELIGIOUS MINDSET) सच्चाई के लिये रूकावट है?

जवाब नं.5:– धरती में अधिकतर लोग ऐसे है कि यदि तुम उनके कहने पर चले तो वे तुम्हें अल्लाह के मार्ग से भटका देंगे, वे तो केवल अटकल के पीछे चलते है, और वो सिर्फ अटकल ही

दौड़ाते हैं। (सूरः अनआम 6:116)

और उनमें के अकसर सिर्फ अटकल (गुमान) की पैरवी करते है और कुछ शक नहीं अटकल सच्चई को कुछ भी दूर नहीं कर सकती बेशक अल्लाह तुम्हारे तमाम कामों को जानता है। (सूरः यूनुस 10:36)

गलत लोगों की गलत दलीलों और उनके जवाब

कुरआन में 2:170, 5:104:, 7:28.70,, 10:78, 31:34, 43:22—23

और उनसे जब कभी कहा जाता है कि अल्लाह तआला की उतारी हुई किताब की ताबेदारी करो तो जवाब देते हैं। कि हम तो उस तरीके की पैरवी करेंगे जिस पर हम नें अपने बाप दादा को पाया चाहे उनके बाप दादा बेअक्ल और रास्ते से भटके हुए हो। (सूरः बकरः 2:170)

और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह तआला ने जो अहकाम नाजिल फरमाए हैं उनकी तरफ और रसूल की तरफ रूजू करो तो कहते है कि हमको वही काफी है जिस पर हमने बड़ों को पाया क्या अगरचे उनके बड़े न कुछ समझ रखते हों और न हिदायत रखते हों। (सूरः अलमाइदा 50%104)

बुजुर्ग 50% सही और 50% गलत भी कह सकते हैं इसलिये उसे कुरआन और हदीस में चेक करना चाहिये जो कसौटी पर परखी जाए वही बात खरी होती है न की बुजुर्ग जो कहें।

जो काम (अमल) ज्यादा लोग करते हैं

वो हमेशा सही होता है

यह गलत सोच है सही काम को ज्यादा लोग न करें तो वह गलत नहीं हो जाता। गलत काम को ज्यादा लोग करें तो वह सही नहीं बन जाता। अगर ज्यादा लोगों के कामों को कसौटी मान लिया जाए तो दुनिया में ज्यादातर लोग जाहिल होते हैं और शिर्क करते हैं और गुनाहगार, गरीब और बीमार और बिदअती होते हैं। तो क्या इन चीजों की ज्यादती की वजह से सही मान लिया जाए।

पहले खुद सुधर जायें फिर दूसरे के सुधार की कोशिश करें

कः— कोई इन्सान यह दावा नहीं कर सकता कि 30 साल बाद में परफेक्ट सही इन्सान बन जाऊंगा। कब बुरा इन्सान अच्छा बन जाए और कब अच्छा इन्सान बुरा बन जाए कहा नहीं जा सकता दुनिया इम्तिहानगाह है इन्सान को आजादी है चाहे नेक बन जाए चाहे बुराई के रास्ते पर चले।

खः— खुद को सही करने की कोशिश करते रहना और दूसरे को सही होने के लिए कहते रहना एक साथ करने वाला काम है। दुसरे लोगों से बार—बार अच्छा बनने को कहते रहने का एक फायदा यह भी है कि दूसरे सुधरें या न सुधरें, अच्छी बात पलट कर कहने वाले पर आती है और वह खुद सुधर जाता है।

गः— मजहब के सिलसिले में हमारे इस गलत रवैये (WRONG ATTITUDE) की कई वजहें हैं। हम अपने हर काम के सिलसिले में माहिरीन (EXPERTS) से मदद लेते है।। जैसे

बीमारी में डाक्टर से, मकान बनवाने के लिए इंजीनियर से, मगर मज़हब के सिलसिले में हम अनाड़ियों से मश्वरा करते हैं। या अपनी अटकलों पर चलते हैं। मज़हब के सिलसिले में हम यह नहीं देखते कि बात असली (AUTHANTIC) है या (UN AUTHANTIC) नकली।

O अच्छी नीयत (GOOD INTENTION) और निष्ठा (SINCERITY) के साथ जो (मजहबी काम किया जाता है वह सही होता है। खुदा उसे कबूल करता है। मजहबी काम करने से पहले उसकी जाँच पड़ताल कर लेनी चाहिए जब साबित हो जाए कि कुरआन हदीस में मौजूद है, सही दलीलों के साथ फिर नीयत करना चाहिए। हम लोग अमल की तहकीक करते नहीं कि या जाने वाला काम सही है या गलत बस नीयत की बुनियाद पर गलत चीज को सही समझ कर करते रहते हैं।

किसी (मजहबी) बात पर अमल करना उसका इल्म (knowledge) हासिल करने से बेहतर है

हम अमल जोश में करते हैं। हमें दीन का पहले सही इल्म होना चाहिए हमें यह समझ लेना चाहिए कि इल्म हासिल करना खुद एक अमल है, क्योंकी इल्म हासिल करने के दौरान इन्सान खुद को एक जगह बिठाता है, आराम करने की चाह के बावजूद आराम नहीं करता अपनी आँखें, कान, हाथ, दिमाग इन सबका इस्तेमाल करता है। क्योंकी इल्म ईमान का भी रहनुमा है। और अमल का भी। बिना इल्म के इन्सान खुद भी गुमराह होता है और दूसरों को भी गुमराह करता है।

स्वार्थी नफ़्सपरस्त झूठे धार्मिक गुरूओं की पहचान

पिछली उम्मतें और यहूदी ईसाई जो गुमराह हुए उस में एक बहुत बड़ा सबब यह था कि वो अपने उलमाओं और बुजुर्गों की बातों को बिना दलील मान लेते थे। चाहे वो हलाल हो या हराम।

अल्लाह ने फरमाया (मुसलमानों को नसीहत है कि)

ऐ ईमान वालों ! अहले किताब के उलमा और बुजुर्गों (संत) में बहुत ऐसे लोग हैं जो लोगों का माल गलत तरीके से खाते हैं। और अल्लाह की राह से रोकते हैं और जो लोग सोना और चाँदी जमा करते हैं और उसको अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते उनको दर्दनाक अज़ाब की खुशखबरी सुना दो। (सूरः तौबा 9:34)

इन्होंने अल्लाह को छोड़ कर अपने उलेमाओं और मशाइख (बुजुर्गो) संतों को रब (खुदा) बना लिया था। (सूरः तौबा 9:31)

उलमा–ए–सू शख्सियत परस्ती और फ्रिकापरस्ती की दावत देते हैं। और कहते हैं कि कुरआन हदीस तुम्हारे समझ में नहीं आयेगा मतलब तुम जाहिल बने रहो और कुरआन की तफसीर को अपने फ्रिकों के मुताबिक करते रहें । ताकी उन्ही की तफसीर पढ़ें और उसी फ्रिके से जुड़े रहें और अन्धे होकर अमल करते रहें।

और हक को बातिल के साथ न मिलाओ और सच्ची बात को न छुपाओ। (सूरः बकरः 2:42)

जिस तरह यहूदी और ईसाई गुमराह हुए आज मुसलमान भी उसी रास्ते पर चल रहे हैं। आज मुसलमान में भी झूठे धार्मिक गुरू (आलिम) पाये जाते हैं हम लोग अपने मजहबी आलिमों के बात को

कुरआन हदीस और सही दलीलों से नहीं परखते (NO CROSS CHECK) और हम अपनी जिद की वजह स अपनी गलत बात पर अड़े रहते हैं, जब कि अन्दर से हम जान रहे होते हैं, कि हम गलत हैं। हम ज्यादातर अपने गुमानों (अटकलों) और ख्वाहिशों की पैरवी करते हैं, हम मज़हब के सिलसिले में अपने दिमाग का बहुत कम इन्तेमाल करते हैं, नतीजा, ये और इस तरह की दूसरी सारी सोचें लिए सच्चाई (TRUTH) तक पहुचने के रास्ते में एक बहुत बड़ी रूकावट (BARRIER) बन जाती है।

अबू हुरैरह और मुआविया बिन अबी सुफियान रजी. फरमाते है कि मोहम्मद स.अ.व. ने फरमाया मुसलमानों मे 73 फिर्के हो जायेंगे 72 जहन्नमी, सिर्फ एक फ़िका जन्नती होगा। (अबू दाऊद 4596–4597)

❍ जो रसूल स.अ.व. और सहाबा वाले रास्ते पर होगा और जिसने कुरआन और सुन्नत को मजबूती से पकड़ा होगा।

❍ सोचो अकसरीयत जहन्नम में जायेगी, सीधी राह पर चलने वाले कम है।

"और अधिकतर लोगों का हाल यह है कि चाहे तुम कितना ही चाहो वे ईमान लाने वाले नहीं हैं। "(सूरः यूसुफ 12:103)

"और अधिकतर लोगों का हाल यह है कि वह अल्लाह को मानते भी हैं तो इस तरह कि उसके साथ साझी (मूर्तीया या सृष्टी को पूज्य) ठहराते हैं"। यानी अकसर मुश्रिक हैं। (सूर युसुफ 12:106)

हजरत मुआविया बिन अबी सुफियान रजी. अन्हू फरमाते है कि मैने

मोहम्मद स.अ.व. से सुना एक फ़िका (GROUP) जो हमेश हक पर जमा रहेगा (मजबुती से कुरआन और हदीस पर) उनको कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकेगा और उनका साथ छोडने वाले भी उनको कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकेगे यहाँ तक कि अल्लाह का हुक्म (कयामत का दिन) आ जाएगा तब भी वो सही रास्ते पर होंगे। (बुखारी किताब 1 हदीस 3641)

हजरत मुगीरः बिन शोआ कहते है मैने रसूल स.अ.व. को फरमाते सुना है कुछ लोग मेरी उम्मत (NATION) के हमेश हक पर होंगे यहा.तक कयामत (DAY OF JUDGEMENT) आ जाएगा और वे हक पर ही रहेंगे। (बुखारी किताब 1 हदीस 3640)

सवाल नं. 6:– इस्लाम सही धर्म है तो मुसलमान फ़िको (GROUP) में क्यों बटें हैं। कौन सही है कौन गलत हम कैसे पहचाने सही रास्ते पर कौन है?

जवाब नं. 6:– किसी धर्म या मज़हब को समझने के लिए मजहब के मानने वालों को नहीं देखना चाहिए और न ही सोसाईटी को देख कर कोई नतीजा निकालना चाहिए, बल्कि उनकी मजहबी किताबों में क्या लिखा है वो कसोटी होता है, क्योंकी आज बहुत बड़ी भीड़ आँखे बंद करके धार्मिक गुरूओं और संतो के पीछे चल रही है। या अपनी अटकलों या अपनी मन की इच्छाओं को अपना ईश्वर बना रखा है। कुरआन और हदीस (मोहम्मद स.अ.व. के वचन) में कहीं भी शिया या सुन्नी का नाम नहीं आया है। तो पता चला यह नाम धार्मिक गुरूओं ने दिए हैं,न कि अल्लाह और उसके पैगम्बर ने। कुरआन में नेक लोगों को तीन गुणों (सिफातों) से पुकारा गया है।

1 – मुस्लिम।

2 – मोमिन।

3 – मोहसिन।

कुरआन में इन तीनों गुणों (सिफातों) को दिया गया है। इन को किताब के बीच में समझाया जा चुका है।

फ़िर्के (GROUP) बनाना इस्लाम में हराम है। कुरआन

"और अल्लाह की रस्सी (कुरआन हदीस) को सब मिल कर मजबूती से पकड़ लो और फ़िर्कों (GROUP) से बचो।" (सूरः आले इमरान 3:103)

"और यह की यही मेरा रास्ता है बिल्कुल सीधा अतः उसी पर चलो और दूसरे रास्ते पर न चलो कि (उन पर चलकर) अल्लाह के रास्ते से अलग हो जाओगे इन बातों का खुदा तुम्हें हुक्म देता है ताकि तुम परहेज़गारी (ईश्भय) अपनाओ।" (सूरःअनआम 6 : 153)

"जिन लोगों ने अपने दीन में अलग अलग राहें निकालीं और गिरोहों में बंट गए उन से तुम्हारा कोई सबन्ध नहीं इनका मामला अल्लाह ही के हवाले है। फिर वह उन्हें बतलायेगा कि वे क्या कुछ करते रहे है।" (सूरः अनआम 6:151)

अल्लाह तआला ने हमें उन लोगों से अलग रहने का आदेश दिया है जो धर्म में विभाजन करते हैं। और समुदायों में बाँटते हैं। किन्तु आज जब किसी मुसलमान से पूछा जाये कि तुम कौन हो तो उत्तर मिलता है मैं सुन्नी हूँ शिया हूँ। कुछ लोग अपने आपको हन्फी,

शाफई, मालिकी, हंबली कहते हैं तो कुछ देवबन्दी या बरेलवी कहते हैं।

सवाल नं. 7 :– मरने के बाद क्या होगा। और दोबारा कैसे जिन्दा किया जायेगा?

जवाब नं. 7:– जिसने मृत्यु और जीवन का अविष्कार किया ताकि तुम लोगों को आजमा कर देखे कि तुम में से कौन सदकर्म करने वाला है और वह जबरदस्त भी है और दरगुजर (माफ़ करने वाला भी)। (सूरः मुल्क 67:)

कियामत के दिन पूर्ण और निश्चित न्याय होगा

अततः प्रत्येक व्यक्ति को मृत्यु का स्वाद चखना है। और तुम जब अपने पूरे पूरे आमल (प्रतिफल) पाने वाले हो, सफल वास्तव में वह है जो दोजख के आग से बच गया और जन्नत में दाखिल कर दिया गया रही यह दुनिया तो यह एक प्रत्यक्ष धोखा (माया) है। (सूरः आले इमरान 3: 185)

पूर्ण न्याय कियामत के दिन किया जायेगा। मरने के बाद हर व्यक्ति को हिसाब के दिन (कियामत) एक बार फिर दूसरे मनुष्यों के साथ जिन्दा किया जायेगा। यह संभव है कि एक व्यक्ति अपने सज़ा का एक हिस्सा दुनिया ही में भुगत लें, किन्तु दण्ड और पुरुस्कार का पूरा फैसला आखिरत ही में किया जायेगा। संभव है अल्लाह तआला किसी अपराधी को इस दुनिया में सज़ा न दे लेकिन कियामत के दिन उसे अपने एक एक कृत्य (कर्म) का हिसाब चुकाना पड़ेगा। और वह आखिरत अर्थात मृत्युपरांत जीवन में अपने एक एक

अपराध की सज़ा पायेगा।

तुम अल्लाह का इन्कार केसे कर सकते हो हालांकि तुम मुर्दा थे उसने तुम्हें जिन्दा किया फिर तुम्हें मौत देगा फिर जिन्दा करेगा फिर उसकी तरफ लौटाए जाओगे। (सूरः बकरः2 : 28)

इस कुरआन के हिस्से से यह बात स्पष्ट हो गई कि एक वक्त ऐसा था कि हम मुर्दा थे हमारा काई अस्तित्व नही था जेसे किसी की उम25 साल है उस से पूछा जाए कि 25 साल पहले तुम कहाँ थे इसी तरह हर इन्सान पर यह दौर गुजरा कि उसका अस्तित्व मुर्दा था फिर ईश्वर नें उसे जिन्दगी दी यह भी सही बात है हम आँखों से देखते हैं जो सच है, फिर अल्लाह हमें मौत देगा यह भी सही बात है। हम अपनी आँखों से लोगों को मरते देखते हैं। अब रह जाता है कि वह दोबारा जिन्दा केसे किया जायेगा कुरआन से जवाब लेते हैं।

और वही तो है जो अपनी रहमत (बारिश) से पहले हवाओं को खुशखबरी (बनाकर) भेजता है यहाँ तक कि जब वो भारी–भारी बादलों को उठा लाती है तो हम उसको एक मरी हुई बस्ती की तरफ हांक देते हैं, फिर बादल से मेंह (वर्षा) बरसाते है। फिर वर्षा से हर तरह के फल लहलहाते नजर आते हैं, इसी तरह हम मुर्दों को (जमीन से) जिन्दा करके बाहर निकालेंगे यह आयतें इस लिए बयान की जाती हैं ताकि तुम नसीहत पकडो। (सूरः आराफ 7 : 57)

नोटः– गर्मी के मौसम में हरी घास सूख कर चूरा–चूरा हो जाती है। फिर बारिश में हर प्रकार की घास और सब्जियां फल–फूल लहलहाते नजर आते हैं। गर्मी में घास और झाडियां सूख जाती हैं

और मर जाती हैं बारिश आने पर उनको नया जीवन मिलता है उसी प्रकार अल्लाह इन्सानों को दोबारा जीवित करेगा।

लोगो ! अगर तुमको (मरने के बाद) जी उठने में शक हो तो हमने तुमको (पहली बार भी तो) पैदा किया था (यानी शुरू में) मिटटी से, फिर उससे वीर्य (सफेद पानी) बनाकर, फिर उससे खुन का लोथडा बनाकर, फिर उससे बोटी बनाकर, जिसकी बनावट पूरी भी होती है और अधूरी भी, ताकि तुम पर अपना पैदा करने वाला होना जाहिर कर दे, और हम जिसको चाहते हैं एक मुकर्रर वक्त तक पेट में ठहराए रखते हैं, फिर तुमको बच्चा बनाकर निकालते हैं, फिर तुम जवानी को पहुँचते हो, और कुछ (बुढ़ापे से पहले मर जाते हैं) और कुछ बूढ़े खूसट हो जाते हैं और बुढ़ापे की बहुत खराब उम्र की तरफ लौटाए जाते हैं, कि बहुत कुछ जानने के बाद बे इल्म हो जाते है। और ऐ देखने वाले तू देखता है कि एक वक्त में जमीन सूखी पड़ी होती है फिर जब हम उस पर मेंह बरसाते हैं तो वह हरी भरी हो जाती है और लहलहाने लगती है और तरह तरह की रौनकदार चीजें उगाती हे, इन कुदरतों से जाहिर है कि अल्लाह ही हक़ और सच्चा है और यह कि वह मुर्दों को जिन्दा कर देता है, और यह कि वह हर चीज पर कुदरत (ताकत) रखता है। (सूरः हज्ज 22:5–6)

नोटः– जो लोग हजारों लोगों को मार डालते हैं। जो लोगों पर जुल्म करते हैं। जो अपने पैसों से रिश्वत देकर पुलिस और जजों को खरीद लेते हैं, इन लोगों को अल्लाह कियामत के दिन इंसाफ देगा उस दिन सिक्का, नेकी और बदी का चलेगा। जिसने किसी पर जुल्म किया होगा उसकी नेकियाँ मजलूम को दे दी जायेंगी, और अगर उसके पास नेकियाँ नहीं होंगी तो उसके बुरे कर्म उस जालिम पर डाल दिए जायेंगे और फैसला करने वाला अल्लाह

इन्साफ के साथ फैसला करेगा।

सवाल नं.8:- अल्लाह की इबादत का मकसद क्या है?

जवाब नं.8:- जानदार और बेजान सारी चीजें पूजा (इबादत) में लगी है। अल्लाह ही के लिये जमीन और आसमान की सब मख्लूक खुशी और नखुशी से सज्दा (नतमस्तक) करती है और उनके साये (छाया) भी सुबह व शाम। (सूरः रअद 13:15)

क्या तू नही देख रहा है कि अल्लाह के सामने सजदे में है सब आसमानों वाले और सब जमीन वाले सूरज और चाँद और सितारे और पहाड़ और पेड़ पौधे और जानवर और बहुत से इन्सान भी। (सूरः हज्ज 22:18)

1 - इस्लाम धर्म में जबरदस्ती नहीं है

कसम है नफ्स (मन) की और उसे ठीक ठाक बनाने की, फिर समझ दी बुराई और भलाई की, जिसने मन को बुराईयों से पाक किया वो कामयाब हुवा। और जिसने बुराईयां की उसने उसे मिटटी में मिला दिया वो नाकाम हुआ। (सूरः शम्स 91:7,8,9,10)

इस्लाम धर्म में ज़बरदस्ती नहीं है हिदायत (साफ तौर से जाहिर और गुमराही से अलग हो चुकी है) तो जो शख्स मूर्ती पूजा न करे और अल्लाह पर ईमान लाए उसने ऐसी मजबूत रस्सी हाथ में पकड़ रखी है जो कभी टूटने वाली नहीं है और अल्लाह सब कुछ सुनता और जानता है। (सूरःबकरः 2:256)

2 - मन की इच्छाओं को अपना पूज्य बनाने वालों की सोच

क्या आपने उसे भी देखा जो अपनी ख्वाहिशे नफ़्स मन की (इच्छाओं) को अपना माबूद (पूज्य, ईश्वर) बनाए हुए है। क्या आप उसके जिम्मेदार हो सकते हैं। (सूरः फुरकान 25:43)

और आसमानों और जमीन को अल्लाह ने बहुत ही इन्साफ के साथ पैदा किया है ताकि हर शख्स को उसके किए हुए काम का पूरा बदला दिया जाए और उन पर अत्याचार नहीं किया जाएगा क्या आपने उसे भी देखा जिसने अपनी ख्वाहिशें नफ़्स मन की (इच्छाओं) को अपना माबूद (पूज्य, ईश्वर) बना रखा है। (सूरः जासिया 45:23)

अगर इन्सान अल्लाह (ईश्वर) के बताए हुए रास्ते पर नहीं चलेगा तो फिर जरूर मन की इच्छाओं को अपना ईश्वर बना लेगा और स्वतन्त्रता (Freedom) के नाम पर इन्सान व्यभिचार शराब, बुरे कर्म, शिर्क, और मन के न खत्म होने वाली इच्छाओं को पूरा करने में लगा रहेगा तो यह कहा जा सकता है कि ऐसा इन्सान मन की इच्छाओं और शैतान का पुजारी है। और अपने घमंड में आकर सच्चाई का इन्कार करता है।

अल्लाह की इबादत से मुँह मोड़ने का अंजाम

और हाँ जो शख्स मेरी याद (इबादत) से मुँह मोड़गा उसकी जिन्दगी तंगी (परेशानी) में रहेगी और कयामत (महाप्रलय) के दिन अंधा उठाऐंगे। (सूरः ताहा 20:124)

और तुम्हारे रब का हुक्म जारी हो चुका है कि मुझसे दुआ करो में तुम्हारी दुआएं कबूल करूगा। यकीन मानो कि जो लोग मेरी

इबादत से मुँह मोड़ते हैं वह बहुत जल्द बेइज्जत होकर जहन्नम में दाखिल होंगे।(सूरः मोमिन 40:60)

इस्लाम में इबादत (पूजा) का मकसद

कोई भी इन्सान और कोई भी चीज इस जमीन पर अपनी मर्जी से नहीं आयी और न ही अपनी मर्जी से खत्म (मौत) होगी तो जिसकी मर्जी से हम पैदा हुए और मौत भी उसकी मर्जी से होनी हे तो बीच की जिन्दगी भी हमें उसकी मर्जी से गुजारनी चाहिए वरना हम घमंडी हैं।

जिसने मृत्यु और जिन्दगी का अविष्कार किया ताकि तुम लोगों को आजमा कर देखे कि तुम में कौन सदकर्म करने वाला है और वह जबरदस्त भी है और दरगुजर (क्षमा) करने वाला भी। (सूरः मुल्क 67:2)

रोजी रोटी देने वाला अल्लाह तो फिर इबादत (पूजा) भी उसी की

और हमीं ने जमीन में तुम्हारा ठिकाना बनाया और तुम्हारे लिए गुजर बसर का सामान एकत्र किया मगर तुम कम ही शुक्रगुजार (कृतज्ञ) होते हो। (सूरः आराफ 7:10)

जमीन पर कोई जानदार ऐसा नहीं जिसकी रोज़ी अल्लाह के जिम्मे न हो। (सूरः हूद 11:6)

इस्लाम का मतलब है अपने मन की हर इच्छा को तन, मन, धन, से ईश्वर को समर्पित करना उसके हुक्म को मानना और उसके रोकी

हुई चीजों से अपने आप को बचाना हमें अल्लाह का शुक्र करना चाहिए कि जो लोग उसकी इबादत करते हैं, और जो लोग नहीं करते सब को रोजी रोटी देता है। क्या कभी आपने घोड़े को घास की दुकान पर और जानवरों और पंक्षियों को राशन की दुकान पर लाइन लगाते हुए देखा ? कोई भी अपनी रोजी पीठ पर लाद कर नहीं चलता अल्लाह सबको रोज़ी देता है। और किसी से रोजी रोटी नहीं माँगता।

दुनिया के और धर्म सिर्फ आत्मा की शुद्धिकरण करते हैं पर इस्लाम आत्मा और बदन दोनों को शुद्ध करने का रास्ता बताता है, और मरने के बाद की जिन्दगी पर भी रौशनी डालता है।

1 – इस्लाम में इबादत सिर्फ नमाज़ पढ़ना ही नहीं है बल्कि 24 घंटे का हर अमल अल्लाह और रसूल के बताए हुए तरीके पर करना इबादत है।

अल्लाह कर्मो को तीन शर्तो के साथ ग्रहण (कबूल) करता है।

1 – अल्लाह को एक मानना और उसके साथ किसी को शरीक (साझी) न बनाना।

2 – सच्ची निष्ठा और इख्लास से अमल करना।

3 – अल्लाह और रसूल के तरीके पर कर्म करना।

इबादत के फायदे

1 – अल्लाह की याद और उससे सम्बन्ध मजबूत करने का तरीका

इबादत से मुँह मोड़ते हैं वह बहुत जल्द बेइज्जत होकर जहन्नम में दाखिल होंगे।(सूरः मोमिन 40:60)

इस्लाम में इबादत (पूजा) का मकसद

कोई भी इन्सान और कोई भी चीज इस जमीन पर अपनी मर्जी से नहीं आयी और न ही अपनी मर्जी से खत्म (मौत) होगी तो जिसकी मर्जी से हम पैदा हुए और मौत भी उसकी मर्जी से होनी हे तो बीच की जिन्दगी भी हमें उसकी मर्जी से गुजारनी चाहिए वरना हम घमंडी हैं।

जिसने मृत्यु और जिन्दगी का अविष्कार किया ताकि तुम लोगों को आजमा कर देखे कि तुम में कौन सदकर्म करने वाला है और वह जबरदस्त भी है और दरगुजर (क्षमा) करने वाला भी। (सूरः मुल्क 67:2)

रोजी रोटी देने वाला अल्लाह तो फिर इबादत (पूजा) भी उसी की

और हमीं ने जमीन में तुम्हारा ठिकाना बनाया और तुम्हारे लिए गुजर बसर का सामान एकत्र किया मगर तुम कम ही शुक्रगुजार (कृतज्ञ) होते हो। (सूरः आराफ 7:10)

जमीन पर कोई जानदार ऐसा नहीं जिसकी रोज़ी अल्लाह के जिम्मे न हो। (सूरः हूद 11:6)

इस्लाम का मतलब है अपने मन की हर इच्छा को तन, मन, धन, से ईश्वर को समर्पित करना उसके हुक्म को मानना और उसके रोकी

हुई चीजों से अपने आप को बचाना हमें अल्लाह का शुक्र करना चाहिए कि जो लोग उसकी इबादत करते हैं, और जो लोग नहीं करते सब को रोजी रोटी देता है। क्या कभी आपने घोड़े को घास की दुकान पर और जानवरों और पंक्षियों को राशन की दुकान पर लाइन लगाते हुए देखा ? कोई भी अपनी रोजी पीठ पर लाद कर नहीं चलता अल्लाह सबको रोज़ी देता है। और किसी से रोजी रोटी नहीं माँगता।

दुनिया के और धर्म सिर्फ आत्मा की शुद्धिकरण करते हैं पर इस्लाम आत्मा और बदन दोनों को शुद्ध करने का रास्ता बताता है, और मरने के बाद की जिन्दगी पर भी रौशनी ड़ालता है।

1 – इस्लाम में इबादत सिर्फ नमाज़ पढ़ना ही नहीं है बल्कि 24 घंटे का हर अमल अल्लाह और रसूल के बताए हुए तरीके पर करना इबादत है।

अल्लाह कर्मो को तीन शर्तो के साथ ग्रहण (कबूल) करता है।

1 – अल्लाह को एक मानना और उसके साथ किसी को शरीक (साझी) न बनाना।

2 – सच्ची निष्ठा और इख्लास से अमल करना।

3 – अल्लाह और रसूल के तरीके पर कर्म करना।

इबादत के फायदे

1 – अल्लाह की याद और उससे सम्बन्ध मजबूत करने का तरीका

और न किसी चीज़ को हम हराम ठहराते, इसी तरह उन लोगों ने भी झुठलाया था जो इन से पहले गुज़र चुके हैं, यहाँ तक की उन्हों ने हमारी यातना का मजा चख लिया। कहो तुम्हारे पास कोई (ज्ञान) इल्म है जिसे हमारे सामने पेश कर सको, तुम तो मात्र अटकलों पे चल रहे हो, और अटकल की बातें करते हो। (सूरः अनआम 6 :148, सूरः नहल 16 : 35)

इसी प्रकार तुमसे पहले जिस बस्ती में भी हमने खबरदार करने वाला भेजा उसके खुशहाल लोग ने यही कहा कि हम ने अपने बाप दादा को एक तरीके पर पाया है और हम उनके पदचिन्हों पर चल रहे हैं। उस खबरदार करने वाले ने कहा अगर मैं उस तरीके के मुकाबले में जिस पर तुमने अपने बाप दादा को पाया है बेहतरीन हिदायत लेकर तुम्हारे पास आया हूँ, तो क्या तुम इस सूरत में भी उन्हीं के पदचिन्हों पर चलोगे ? उन्हों ने जवाब दिया तुम जो संदेश देकर भेजे गए हो हम उसके इन्कारी हैं आखिरकार हम ने उनको सज़ा दी तो देखो कैसा अन्जाम हुआ झुठलाने वालों को। (सूरः जुख्रूफ 43 : 23–24–25)

अच्छे कर्म अल्लाह की कृपा से बुरे कर्म इन्सान की तरफ से

तुझे जो भलाई पहुँचे वो अल्लाह की तरफ से हे। और जो बुराई तुझे पहुँचे वो तेरे नफ़्स (खुद इन्सान) की तरफ से है। (सूर : निसा 4 :79)

जो मुसीबत भी तुमको पहुँचती है तुम्हारे अपने करतूतों के कारण पहुँचती है। और बहुत सी बुराइयों से वह दरगुज़र (नज़रअंदाज)

कर देता है। (सूरः शूरा 42 :30)

नेकी और भले की हालत अल्लाह की रहमत का उपहार एवं उदार दान है जबकी बुराई और बुरी हालत इन्सान के अपने कर्मों का फल होता है, जो अल्लाह के प्रदान किये हुए अधिकारों को गलत ढंग से इस्तेमाल करने से जाहिर होता है, इसलिए शर (बुराई) को अपनी तरफ से सम्बंधित किया जाता है।

तकदीर और ईमान सब्र और शुक्र (कृतज्ञता) के बीच है

कोई मुसीबत मुल्क पर और खुद तुम पर नहीं पड़ती, मगर इससे पहले कि हम उसको पैदा करें। एक किताब में तकदीर (लौहे महफूज में) लिखी हुई है और यह काम खुदा को आसन है। ताकि तुम अपने से नुक़सान होने वाली किसी चीज पर रंजीदा न हो जाया करो, और दी गई चीज पर इतराया न करो, और इतराने वाले और शेखीखोर को अल्लाह पसंद नहीं करता। (सूरः हदीद 57 : 22–23)

नोट :– ग़म और खुशी इन्सान को नाज़ायज कामों तक पहुंचा देती हैं वरना तकलीफ पर गम और राहत पर खुश होना यह एक स्वाभाविक (NATURAL) अमल है। पर एक मोमिन (अल्लाह पर आस्था रखने वाला) तकलीफ पर सब्र और खुशी पर शुक्र करता है। ये अल्लाह की बनाई तकदीर है, बेसब्रा और चिंतित होने से उस तकदीर में तब्दीली (बदलाव) नहीं आ सकती, और राहत पर इतराना नहीं चाहिए अल्लाह का शुक्र (धन्यवाद) अदा करना चाहिए कि यह सिर्फ उसके मेहनत का नतीजा नहीं है, बल्कि अल्लाह की कृपा फज़ल, करम, और एहसान है। कभी कभी इन्सान बेसब्रा

होकर दिमागी बीमारियों और आत्मा हत्या तक कर बैठता है। और खुशी मिलने पर घमंडी बन जाता है।

बुराई और आजमाईश का फर्क और सब्र व शुक्र के फायदे

बुराईः उस काम को कहा गया है जो अल्लह और रसूल स.अ.व. ने बताई और जिस पर दंड देने का हुक्म आया तथा वो बुरा काम जिसको करके मन को पछतावा होता है।

आज़माईश : नेक लोगों और नेकी के कामों में भी परेशानी और तकलीफ उठानी पड़ती है, अल्लाह अपने नेक बन्दों (मोमिनों) को आज़माता है कि कौन सच्चा है और कौन झूठा। मोहम्मद स.अ.व. लोगों को एकेश्वरवाद की तरफ बुलाते तो बहूदेववादी आप पर पत्थर मारते, डराते, हँसी उड़ाते, पागल कहते, ये सारी तकलीफें आपको पहुंचाते इन आज़माईशों के बावजूद वो उनके लिए दुआ के लिए हाथ उठा देते और सब्र करते थे।

क्या लोगों ने यह गुमान कर रखा है कि उनके इस दावे पर कि हम ईमान लाए है, हम उन्हें बगैर आजमाए हुए ही छोड देंगे, इन से अगलों को भी हमने खूब जाँचा यकीनन अल्लाह तआला उन्हें भी जान लेगा जो सच कहते है। और उन्हें भी मालूम कर लेगा जो झूठे हैं। क्या जो लोग बुराईयां कर रहे हैं उन्होने ये समझ रखा है, कि वो हमारे काबू से बाहर हो जाएंगे, ये लोग कैसी बुरी सोच (MINDSET) या तज्वीज़ कर रहे हैं। (सूरः अन्कबूत 29:–1, 2,3,4)

और हम किसी न किसी तरह तुम्हारी आज़माइश ज़रूर करेंगे खौफ

(डर) से भूख–प्यास से माल व जान और फलों की कमी से और इन सब्र वालों को खुशखबरी दे दीजिए, जिन्हें जब कोई मुसीबत आती है तो कह दिया करते हैं कि हम तो खुद अल्लाह तआला की मिलकियत हैं, और हम उसी की तरफ लौटने वालें हैं। (सूर : बकरः 2 : 155 –156)

सब्र के फायदेः

ऐ ईमान वालों सब्र और नमाज के ज़रिये मदद चाहों, अल्लाह सब्र करने वालों का साथ देता है। (सूरः बकरः 2 :153)

उन पर उनके रब की सलामती (कृपा) और रहमत (दया) है, और यही लोग सीधे रास्ते वाले हैं। (सूर : बकरः 2 :157)

हदीस : सोहैब रजी. फरमाते हैं कि अल्लाह के रसूल स.अ.व. ने कहा क्या ही अच्छे मामले हैं ईमान वाले के जब उसको कुछ अच्छाई पहुंचती है वो शुक्र करता है, और वह उसके लिए अच्छा होता है। और जब कोई दुख (परेशानी) पहुंचती है तो सब्र करता है, और सब्र उसके लिए अच्छा होता है। यह सिर्फ मोमिन में पाया जाता है। (मुस्लिम किताबुज्जुहद 2999)

शुक्र क्या है :

अल्लाह शुक्र को पसंद करता है। पर किसी का शुक्र करना उसको कोई फायदा नहीं पहुंचाता क्योंकि वह शुक्र का मोहताज़ नहीं।

अगर तुम नाशुक्री करो अल्लाह तुम्हारा मोहताज नहीं और अपने बंदों के लिए नाशुक्री उसको पसंद नहीं, और यदि तुम शुक्र करो तो

वो उसको पसंद करता है, कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठायेगा, फिर तुम्हारी वापसी तुम्हारे रब ही के तरफ है, वह तुम्हें बताएगा कि तुम क्या करते रहे हो, वह दिलों का हाल जानता है (सूरः लुकमान 31 : 12)

नोट :– अल्लाह जानता है कि कौन स्वर्ग (जन्नत) और कौन नर्क (जहन्नुम) में जायेगा यह बात अल्लाह को पहले ही से पता हैं जैसे स्कूल में टीचर अपने साल भर पढाने के अनुभव से छात्रों (Student) के बारे में ये कहता है कि यह छात्र फेल हो जायेगा, इस बात का इल्म टीचर को होता है। इसका मतलब यह नहीं की टीचर इसका जिम्मेदार है। इसी तरह अल्लाह ने इन्सान को ज्ञान, इल्म, कुरआन, मोहम्मद स.अ.व. को भेजकर सही गलत बता दिया अब जो कर्म करेगा फायदा उठाएगा और जो नहीं करेगा वो नुकसान उठाएगा तकदीर नेक कर्मों से कदापि नहीं रोकती इन्सान को चुनाव में आजादी हे। अच्छा कर्म चुने या बुरे कर्म तक़दीर इसकी जिम्मेदार नहीं ।

अब यह अच्छा चुनाव (CHOICE) करता है नेक काम करता है। तो वो चुनाव करता है जन्नत का। अगर गलत काम करता है तो नर्क (जहन्नम) चुनाव करता है।

कुरआन कहता हैः

और उसे रास्ता भी दिखा दिया, अब वह चाहे शुक्रगुजार (कृतज्ञ) बने चाहे नाशुक्रा (इंकारी) बने।

सवाल नं. 10:– क्या गैर मुस्लिम और दूसरे धर्मों के लोगों को नेक कर्मों का फल मिलेगा ?

जवाब नं. 10:– इस्लाम में 4 शर्तें है अमल (कर्म) कबूल (ACCEPT) होने की।

1 – एक अल्लाह पर ईमान मोहम्मद स.अ.व. को अन्तिम पैगम्बर मानना।

2 – कुरआन के हुक्म के मुताबिक और रसूल स.अ.व. के तरीके के मुताबिक हो।

3 – सच्चे इख्लास (निष्ठा से) सिर्फ अल्लाह को राजी करने के लिए कर्म करना न एहसान जतलाना और न घमंडी बनना।

4 – रोजी–रोटी किसी हराम कमाई (झूठ बोलकर, शराब बेचकर, सूद की कमाई इत्यादि) से न हो खून पसीने की कमाई से लोगों की मदद करना।

अगर ये ऊपर की शर्ते किसी भी इन्सान चाहे वो मुसलमान हो या गैर मुस्लिम (हिन्दु, ईसाई, यहूदी, सिख आदि) कोई भी उपर दी गई शर्तों के मुताबिक कर्म नहीं करेगा तो अल्लाह (ईश्वर) उनके कर्मों का कोई फल नहीं देगा। और यह लोग नुकसान उठाने वाले होंगे।

कुछ गैर मुस्लिम गरीबों को दान देते हैं और भूकम्प या सैलाब से पीड़ित लोगों की मदद करते हैं, अस्पताल स्कूल खोलते हैं, उनका फल उन्हें दुनिया ही में दे दिया जायेगा, और अगर वह घमंडी और एहसान जताने वाला है और मूर्ती पूजक नास्तिक है तो ऐसे लोगों को अल्लाह सीधा रास्ता नहीं दिखाता और ऐसे लोगों के अच्छे

कर्मों का हिसाब दुनिया ही में ठोक बजा कर पाई–पाई चुकता कर देता है। उनको मालदार बना देगा या उनके मन के इच्छाओं को पूरा कर देगा।

तीन किस्म के लोगों को होश में आ जाना चाहिए।

मुश्रिक़ : उन लोगों को कहा गया है जो अल्लाह को छोड़ कर सृष्टी, मूर्ती, चाँद, सूरज, पत्थर, इन्सानों को पूजते हैं।

काफिर : उन लोगों को कहा जाता है जो अल्लाह का इन्कार करते हैं। और अपने घमंड और अपनी इच्छाओं की वजह से इस्लाम का इन्कार करते हैं।

मुनाफिक़ : उस शख्स को कहा जाता है जो मुँह से अपने आपको मुसलमान कहता है। और दिल में मुसलमानों की दुशमनी और कुफ्र रखता है। ये लोग मुसलमान बनकर उनके राज़ मालूम करके दूसरे लोगों को बताते हैं, क्योंकि वह फसाद चाहते है। यानी चुगली और लड़ाई झगड़ों के ताक में लगे रहते हैं।

कुछ शक नहीं कि मुनाफिक लोग नर्क के सबसे नीचे के दर्जे में होंगे और तुम उनका किसी को मददगार नहीं पाओगे। (सूरः निसा 4 : 145)

काफिर (नास्तिक) मुश्रिक और मुनाफिक यह तीनों मुसलमानों को धोखा देते हैं। और तीनो अपनी मन की इच्छाओं और अटकलों पर चल रहे हैं। और उनके घमंड ने उन्हें बुराई में फंसा रखा हैं

और काफिरों के आमाल की मिसाल उस चमकती हुई रेत की है जो

चटियल मैदान में हो, जिसे प्यासा इन्सान दूर से पानी समझता है। लेकिन जब उसके पास पहुँचता है तो उसे कुछ भी नहीं मिलता, हाँ अल्लाह को अपने पास पाता है जो उसका हिसाब पूरा–पूरा चुका देता है, अल्लाह बहुत जल्द हिसाब करने वाला है। (सूरः नूर 24 : 39)

और अपनी निगाहें हरगिज उन चीजों की तरफ न उठाना जो हमने उन मे से मुख्तलिफ लोगों को दुनिया की सजावट का सामान दे रखा है, ताकि उन्हें उसी में आज़मा लें। तेरे रबका दिया हुवा ही बहुत बेहतर है और बहुत रहने वाला है। (सूरः ताहा 20 : 131)

उन लोगों की मिसाल जिन्होने अपने पालने वाले से इन्कार किया उनके कर्म की मिसाल उस राख की है जिस पर तेज हआ (आंधी) चले जो भी उन्हों ने किया किसी चीज पर कादिर न होंगे यही दूर की गुमराही है। (सूरः इब्राहीम 14 :18)

नोट :– घमंड : हक़ बात का इन्कार करना और दूसरे लोगों को तुच्छ समझना ताकि दुनिया का माल दौलत इकट्ठा करके यह बताना कि मैने अपने ज्ञान से और सूझ बूझ से कमाया है जबकि अल्लाह ने उसे ज्ञान, सूझ बूझ, और माल दिया। यह अल्लाह की देन आज़माईश और परिक्षा है। सच्चे मनसे अल्लाह का अन्तिम आदेश कुरआन और मोहम्मद स.अ.व. अन्तिम पैगम्बर को पढ़ कर सच्चाई पर रिसर्च करना चाहिए।

सवाल नं.11 :– अगर इस्लाम धर्म अच्छा धर्म है तो क्यों बहुत से मुसलमान बेईमान, गरीब, सूदखोर, रिशवत लेने वाले और गलत कामों में क्यों हैं ?

जवाब नं. 11 :- लोगों को 1400 साल का इतिहास उठा कर देखना चाहिए मुसलमानों से अच्छा इन्साफ मुसलमानों के अलावा किसी ने नहीं किया। आज मुसलमान कुरआन और अन्तिम रसूल मोहम्मद स.अ.व. के तालीमात से बहुत दूर हैं तो अल्लाह ने उन्हें इज्जत से महरूम रखा है।

गरीब : हिन्दुस्तान में 83% लोग गैर मुस्लिम NON MUSLIM हैं। 18% मुस्लिम हैं। 38% लोग गरीबी रेखा के नीचे जी रहे हैं। जिसमें S.C.,S.T. और O.B.C. अक्सर तादाद हिन्दुओं की गरीबी रेखा के नीचे जी रही है। और आज गाँवों में छुआछूत के भावनाओं से ग्रस्त हैं। हिन्दुस्तान में दहेज प्रथा हजारों औरतों की आत्मा हत्या का कारण है और माँ के पेट में ही अगर लड़की है तो दुनिया में आने से पहले मार दी जाती है।

सारी दुनिया पर नज़र डाली जाए तो मुसलमान इतने गरीब नहीं जितने इंडिया, पाकिस्तान और बांग्लादेश में हैं। इसके बहुत से कारण हैं। मुसलमानों के लिए नौकरी नहीं और इन्हे प्राइवेट नौकरी करनी पड़ती है।

1 – भ्रष्टाचार बहुत तेजी से बढ़ रहा है।

2 – गर्वमेन्ट की कोई मदद मुसलमानों को नहीं।

3 – नोकरी या ज्ञान का कोई इन्तेजाम या छात्रवृति नहीं दी जाती है।

4 – नेता (POLITICIAN) हिन्दु मुस्लिम फसाद कराकर अपना वोट बैंक मजबूत करते हैं और कमजोर लोग और गरीब बन जाते हैं। गुजरात के दंगों में मुसलमानों का बहुत नुकसान हुआ, वोट बैंक के

नाम पर देश में यह नीति चल रही है कि DIVIDE & RULE विभाजित करो और राज करो।

दुनिया के सबसे गरीब देश नेपाल, इथोपिया, बंग्लादेश आज नेपाल हिन्दु देश है। बहुत बडी तादाद बेरोजगार है। और औरतें व्यभिचार में बड़ी तादाद में हैं।

1 – मीडिया इस्लाम को बदनाम कर रहा है

मीडिया आज WESTERN देशों के हाथ में है। अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, यूरोप में तेजी से फैलने वाला धर्म इस्लाम हें इसलिए यह डरे हुए हैं। और मुसलमानों के खिलाफ गलत खबरें दी जाती हैं। कहीं कोई बम ब्लास्ट हो तो बिना सबूत मुसलमानों का नाम लिया जाता है। अगर 50 साल का आदमी 15 साल की लड़की से शादी करता है तो मीडिया के हेडलाईन में आता है, मुसलमान ने ऐसा किया। और 50 साल का गैर मुस्लिम 6 साल की लड़की का बलात्कार करता है तो समाचार में आखिरी पेज पर लिखा हुआ पाया जाता है, अमेरिका में 2,713 बलात्कार रोज होते है। F.B.I. की रिपोर्ट है पर मीडिया इसको नहीं बताता क्यों ?

2 – बुरे हर धर्म में पाए जाते हैं

बुरे लोग हर धर्म में पाए जाते हैं पर अगर कोई मुस्लिम गलत काम करता है मीडिया उसे दिखाता है कि मुस्लिम शराब पीते हैं, पर हमें मालूम है की गैर मुस्लिमों की तादाद ज्यादा शराब पीती है मीडिया नहीं दिखाता।

3 – 48 मुस्लिम देशों पर गौर किया जाए सिर्फ हिन्दुस्तान पर नहीं पूरे दुनिया के मुसलमानों पर गौर किया जाए तो सारे धर्मों से

ज्यादा मुस्लिम अपने धर्म का पालन करते हैं और शराब से दूर रहते हैं। और सबसे ज्यादा गरीबों को दान देते हैं।

4 – कार को ड्राइवर से न पहचानो

कोई नया माडल कार मार्केट में आती है, और आप ऐसे ड्राइवर को सीट पर बिठाते हैं, जो इस कार को नहीं चला पाता और ठोक देता है। तो आप किसको जिम्मेदार ठहराएंगे कार को या ड्राइवर को, इसी तरह हम इस्लाम को मानने वालों से नहीं पहचान सकते हैं। इस्लाम को परखना है तो कुरआन और हदीस पढ़ो, अगर उसकी जिन्दगी इन दोनों से मिलती है तो सही मुस्लिम है। हमें सब से सही मुसलमान मोहम्मद स.अ.व. की जिन्दगी में देखना चाहिए जो सबसे सही तौर पर इस्लाम पर अमल करके बता गये, और सारी दुनिया के लिए नमूना हैं। न की आम मुसलमान अमेरिका का एक बहुत बड़ा इतिहासकार है जिसका नाम माईकल एच.हार्ट है उसने रिसर्च करके एक किताब लिखी 100 विश्व विख्यात इन्सान, सर्वप्रथम मोहम्मद स.अ.व. को दिया दूसरा इस्हाक़ न्यूटन तथा तीसरा ईसा (जीसस) को दिया गया है।

नोट :– लोगों में JUDGE (फैसला) करने की जल्दी होती है चाहे उसके सारे कारणों पर गौर व फिक्र किया हो या नहीं वो तेजी से फैसला करते हैं। या तो मीडिया के धोखे में आकर या अपनी गलत सोचों के नतीजे में। लोग अपने को मुसलमानों से अच्छा समझते हैं। इसलिए ऐसे सवाल पूछते हैं, हालांकि घमंडी इन्सान की मनोवृत्ति यही होती है कि वह सच बात का इन्कार करता है। और दूसरों को हकीर और गिरा हुआ समझता है।

सवाल नं. 12 :– क्या दलील है कि कुरआन अल्लाह की किताब है, क्या हम गैर मुस्लिमों को कुरआन पढने के लिये दे सकते हैं ?

जवाब नं. 12 :– कुरआन आसमानी किताब है और कोई भी इसका लेखक नहीं । अल्लाह ने इसे मोहम्मद स.अ.व. पर प्रकाशना (वही) एक फरिशते जिब्रील अलै. जो सन् 610 A.D. से लेकर 632 जो मुददत 22 साल में पूरा हुआ तो जमीन पर पहले हाफिजे कुरआन मोहम्मद स.अ.व. हैं। उन्होंने पूरा कुरआन याद किया कुरआन 22 साल की अवधी में, और मस्जिदे नबवी में और अपनी 5 नमाजों में उसे पढ़ते रहे और बहुत बड़ी तादाद उसको हिफ्ज़ (Memorize) करती चली आ रही हे। आज लाखो करोड़ो हाफिज़ उसे पीढ़ी दर पीढ़ी याद करते चले आ रहे हैं। इसलिए मुसलमान चेलेंज कर सकते हैं कि आज 1400 साल से अगर कोई धार्मिक किताब शब्द और मात्राओं के साथ सुरक्षित है तो वह कुरआन है। कुरआन में अल्लाह कहता है :

बेशक यह कुरआन हम ही ने उतारी है और हम ही इसके हिफाजत (सुरक्षा) करने वाले हैं। (सूरः हिज्र 15 : 9)

किसी भी किताब को सुरक्षित करने के लिए तीन चीजों की जरूरत होती है।

1 – उसकी जबान (LANGUAGE)

2 – उसके शब्द (WORDS) ।

3 – उसकी तफ्सीर (EXEGESIS) ।

आज 22 देश ऐसे हैं जहाँ पर अरबी ज़बान बोली जाती है। World में चौथे नम्बर पर बोली जाने वाली ज़बान अरबी है। तो यह एक

ज़िन्दा ज़बान है जिसको अल्लाह ने सुरक्षित रखा जिसकी वजह से कुरआन भी सुरक्षित हे।

कुरआन शब्द Word तथा मात्राओं के साथ सुरक्षित है। एक तो हाफिज़ों द्वारा पीढ़ी लाखों हाफिज़ उसे याद करते चले आ रहे हैं, दो कुरआन की कापी जिसको मोहम्मद स.अ.व. ने जिब्रील फरिश्ते के द्वारा याद किया आज दो जगह सुरक्षित है। ताशकन्द सोवियत यूनियन के म्यूजियम में और दूसरी कापी टोपकपी म्यूजियम इस्तम्बूल तुर्की में मौजूद है। जो उस्मान रजी. ने सुरक्षित कर के दुनिया के हिस्सों में पहुंचाया था।

कुरआन की तफसीर (टीकाकरण) भी आज सुरक्षित हे मोहम्मद स. अ.व. की जिन्दगी का एक–एक लम्हा और हदीसें सुरक्षित हैं। ये हदीसें कुरआन की तफ्सीर हैं। इस लिए कुरआन की तफ्सीर हदीसों के द्वारा सुरक्षित है।

अल्लाह का चेलैंज सारी दुनिया के इन्सानों और जिन्नों को कह दीजिए की अगर तमाम इन्सान और तमाम जिन्नात मिलकर अगर इस कुरआन जैसा लाना चाहें तो उन सबसे इसकी तरह लाना नामुमकिन है, चाहे वे एक दूसरे के मददगार बन जाएँ (सूरः बनीइस्राईल 17: 88)

क्यों वे कहते हैं कि इन (पैगम्बर) ने इसको खुद गढ़ लिया है कहो अगर तुम सच्चे हो तो उस जैसी 10 सूरतें तुम भी बना कर लाओ और अल्लाह के सिवा जिनको तुम मदद के लिए बुलाना चाहते हो बुला लो। (सूरः हूद 11: 13)

और अगर तुम्हे इस किताब के बारे में शक हे जो हमने अपने बन्दे

पर नाजिल किया है तो इस जैसी एक सूरह ही ले आओ और अल्लाह के सिवा जो तुम्हारे मददगर हें उन सबको बुला लो अगर तुम सच्चे हो। (सूरः बकरः 2 : 23)

क्या वे कहते है कि इस कुरआन को इस व्यक्ति ने गढ़ लिया है। कहो अगर तुम सच्चे हो तो इस जेसी एक सूरह ही बना लाओ और अल्लाह के सिवा जिनको तुम बुला सकते हो बुला लो। (सूरः यूनुस 10 : 38)

मोहम्मद स.अ.व. उम्मी यानी पढ़ना लिखना नहीं जानते थे यह एक अकेली मज़बूत दलील है कि कुरआन मोहम्मद स.अ.व. ने नहीं लिखा तकरीबन 1000 आयतें साईन्स के बारे में कुरआन में मौजूद हैं जो बातें आज साईन्स रिसर्च कर रही है वो 1400 साल पहले से ही मौजूद है। बड़े–बड़े SCIENTIST आज इस्लाम में दाखिल हो रहे हैं। उनका आखिरी कौल यह होता है कि यह आसमानी किताब है, इसको कोई इन्सान नहीं लिख सकता।

नोटः– तौरेत और इंजील हिब्रू और ऐरामेक यानी इबरानी और सूरयानी ज़बानो में थीं और ज़बूर भी हिब्रु (इबरानी) जबान में थी तो यह ज़बाने LANGUAGE कोई नहीं बोलता यह LANGUAGE खत्म हो चुकी हैं इस तरह हिन्दु धर्म की किताबें संस्कृत में थीं यह जबान भी लगभग खत्म हो गाई। इस लिए धार्मिक किताबें कभी भी सुरक्षित नहीं रह सकतीं जब तक कि उसकी जबान LANGUAGE सुरक्षित न हो। तो उसके रद्दो बदल की खबर किसी को नहीं होती क्योंकि ORIGNAL किताब मौजूद नहीं हैं

कुरआन गैर मुस्लिमों को देने के बारे में कई मुसलमान शक और शुब्हें में नजर आते हैं। कयोंकि वे इस कुरआन की आयत को समझने में

गलती करते हैं

बेशक यह इज्ज़त वाला कुरआन है। जो एक महफूज़ किताब में दर्ज है। जिसे पाक लोग ही छू सकते हैं। (सूरः वाकिया 56 : 77 –78 –79)

काफिर लोगों ने यह अफवाह उड़ाई थी कि शैतान कुरआन को रसूल पर लाते है। 79 नं. कि आयत में अरबी लफ्ज लायमस्सुहू इस में हू ज़मीर है जो लौहे महफूज जहाँ कुरआन महफूज है। और मुतहहरून से मुराद फरिश्ते हैं क्योंकि वह कभी भी नापाक नहीं होते और गुस्ले जनाबत की उन्हें जरूरत नहीं होती । इस आयत में कुरआन को हालते वजू में छूना या छूना मुराद नहीं। बल्कि नापाक (जिस पर गुस्ल वाजिब हो) क्योंकी हदीस में आया है कि मोमिन नापाक नहीं होता सही बुखारी 283 यहां मोमिन के बारे में रूहानी कुर्फ, शिर्क की नफी की गई है। हमें काफिरों मुश्रिकों को दावत देना चाहिए जब वो इस्लाम के करीब आएं और कुरआन पढ़ने के लिए मांगें तो उन्हें उसके पढ़ने के आदाब बताने चाहिए। क्योंकि आप अगर काफिर से कहोगे कि तुम इस्लामी तरीके से गुस्ल और वजू करके पढ़ो तो न तो उसका गुस्ल होगा और न ही वजू क्यों कि उसने अपने दिल से कलमा पढ़ा ही नहीं। क्योंकि जब सच्चे दिन से कलमा पढ़कर रसूल के तरीके पर अमल करता है तब वो अमल अल्लाह कबूल करता है। क्योंकि सच्चा ईमान कुरआन को पढ़कर समझकर दिल से कबूल कर लेगा तब उस पर यह पाबंदी लगाई जायेगी। क्योंकि मुसलमान पर यह पाबन्दी है कि जनाबत में कुरआन को हाथ से न छुयें पर वजू न होने पर मुसलमान आदमी

नापाक नहीं बल्कि पाक है। और वजू करना नमाज़ के लिए तवाफ के लिए फर्ज़ है। कुरआन पढ़ने के लिये फर्ज़ नहीं बल्कि बेहतर और मुस्तहब है। पर अगर वजू न होने पर कुरआन नहीं पढ़ता तो यह उसके इल्म की कमी है।

अल्लाह के रसूल जो खत दावते इस्लाम के लिए भेजे उसमें हब्शा ETHOPIA का बादशाह नज्जाशी, और ईरान का बादशाह, मिस्र और स्कन्दरिया का बादशाह किसरा और मक़ोकिस तथा बहरैन का बादशाह मुंजर बिन सावा को खत लिखे जिस में कुरआन की आयतें अरबी में लिखी थीं। मोहम्मद स.अ.व. ने गुस्ल और न ही वजू की पाबंदी लगाई उन खतको पढ़ने वालों पर।

22 अरबी मुल्क हैं और वहां पर गैर मुस्लिम भी अरबी जबान बोलते हैं। और रसूल के जमाने से पीढी दर पीढ़ी जो यहूदी ईसाई लगभग 14 मिलियन हैं उनकी जबान अरबी है उनको कुरआन देना पड़ा तो अरबी ज़बान में ही देना पडेगा।

सवाल नं. 13 :– कुरआन हदीस के रोशनी में वे नसीहतें बताएं जो कुरआन ने और मोहम्मद स.अ.व. ने आखिरी वक्त में सारी इन्सानियत को दीं ?

जवाब नं. 13 :– कुरआन सारी इन्सानियत के लिए उतारी गई । न कि अरब या मुसलमानों के लिए कुरआन में है, मोहम्मद स. अ.व. से अल्लाह कहता हैः

और हमने आपको तमाम जहान (सारी दुनिया) के लिए रहमत – दयावान) बना कर भेजां (सूरः अंबिया 21 : 107)

हमने आपको तमाम लोगों के लिए खुशखबरियां सुनाने वाला और

डराने वाला बना कर भेजा। हाँ मगर यह सही हे कि लोगों कि अकसरीयत (बेइल्म) ज्ञान नहीं रखती । (सूरः सबा 34 : 28)

1 – ऐ लोगों अपने उस रब की इबादत करो जिसने तुम्हें और तमु से पहले के लोगों को पैदा किया ताकि तुम अल्लाह से डरो। (सूरः बकर : 2 : 21)

2 – जिसने तुम्हारे लिए जमीन को फर्श और आसमान को छत बनाया और आसमान से पानी उतार कर उस से फल पैदा करके तुम्हें रोज़ी दी खबरदार जानने के बावजूद अल्लाह के शरीक (साझी) मुकर्रर न करो । (सूरः बकरः 2 :22)

3 – हमने जो कुछ अपने बन्दे (मोहम्मद स.अ.व.) पर अवतरित किया है अगर तुम्हें शक हो और तुम सच्चे हो तो उस जैसी एक सूरः (अध्याय) बना लाओ तुम्हें अख्तियार है कि अल्लाह तआला के सिवा अपने मददगारों को भी बुला लो। (सूर : बकर : 2 :23)

4 – पस् अगर तुमने न किया और तुम हरगिज़ नहीं कर सकते तो (इसे सच मान कर) उस आग से बचो जिसका इंधन इन्सान और पत्थर हैं, जो इन्कार करने वालों के लिए तैयार की गई । (सूरः बकरः 2 :24)

5 – ऐ लोगों तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से सनद और दलील आ पहुँची और हमने तुम्हारी तरफ वाज़ेह और साफ नूर उतार दिया है। (सूरः निसा 4 : 174)

और उन्हें अपनी तरफ का रास्ता दिखा देगा। (सूरः निसा 4 : 175)

7 – लोगो ! तुम्हारे रब की तरफ से जो कुछ तुम पर नाज़िल हुआ है उसकी पैरवी करो और उसको छोड़कर दूसरे सरपरस्तों की

पैरवी न करो तुम कम ही नसीहत कबूल करते हो। (सूरः आराफ 7 :3)

8 – तो (याद रखो) हम उन लोगों जरूर पूछ ताछ करेंगे जिन की तरफ पैगम्बर भेजे गए और निश्चय ही पैगम्बरों से भी पूछेंगें। (: आराफ 7 : 6)

9 – फिर हम पूरे इल्म के साथ सारा किस्सा उनके सामने बयान करेंगे और हम कहीं गायब तो नहीं थे। वज़न उस रोज़ हक़ (सत्य) होगा। तो जिनकी मीज़ानें (पलड़े) हल्की होंगी तो यह वही लोग होंगे जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला क्योंकी वे हमारी आयतों के साथ नाइन्साफी करते थे। (सूरः आराफ 7 : 7–8–9)

10 – और हमने तुम्हें जमीन में अख्तियार वाला बनाया और तुम्हारे लिए गुज़र–बसर का सामान इकट्ठा किया मगर तुम कम ही शुक्रगुजार (कृतज्ञ) होते हो । (सूरः आराफ 7: 10)

11 – लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे रब के पास से नसीहत आ गई और ऐसी चीज जो दिलों के रोगों के लिए रोगमुक्ति का उपचार (शिफा) है। और ईमान वालों के लिए हिदायत और रहमत। (सूर यूनुस 10 :57)

12 – कहो यह (किताब) अल्लाह के फज़्ल (उदार अनुग्रह) और उसकी रहमत को लेकर नाज़िल हुई है तो चाहिए कि इस पर खुशी मनाए, यह उन तमाम चीजों से बेहतर है जिसे वे जमा कर रहे हैं। (सूरः यूनुस 10 : 58)

मोहम्मद स.अ.व. का आखिरी खुतबा

मोहम्मद स.अ.व. ने आखिरी नसीहतें (खुतबा) हिजरत (इलाका

त्याग मक्का से मदीना) के 10 साल बाद अरबी तारीख 9 ज़िलहिज्जा उरैना घाटी में अरफात के मैदान में ये खुतबा दिया जो सारी इन्सानियत के लिए मशअले राह सीधा रास्ता दिखाने वाला है। मोहम्मद स.अ.व. ने फरामाया

ऐ लोगों मेरी नसीहत बहुत ध्यान से सुनो और हज के अरकान मुझ से सीख लो फिर शायद मौका न मिले और यह बातें उन लोगों तक पहुँचा देना जो यहाँ मौजूद नहीं हैं।

1 – ऐ लोगों यह महीना यह दिन यह शहर पाक (SACRED PLACE) है मुसलमान की जान और माल व इज्ज़त दूसरे मुसलमान पर हराम है। अगर कोई मुसलमान अपनी जान, माल, इज्जत की हिफाज़त करते हुए मरता है तो वह शहीद है। अमानतें उनके मालिकों तक पहुंचा देना। किसी को कोई नुक़सान या क्षति न पहुंचाना तो तुम्हें भी कोई नुकसान नहीं पहुंचाएगा।

2 – याद रखो बेशक तुम अपने रब से जरूर मुलाकात करोगे फिर वह जरूर तुम से तुम्हारे आमाल के बारे में पूछ ताथ करेगा।

3 – ब्याज (INTEREST) हराम कर दिया गया है। क्योंकि ब्याज घरों को बर्बाद करने वाला है। रहम और इन्सानियत को खत्म कर देता है। और अमीरों – गरीबो के बीच दुश्मनी के बीज बोता है। ब्याज एक ऐसा हथियार है जो अमीरों के हाथ में होता है जिससे वो गरीबों का माल हडपते हैं जैसे जंगली कुत्ते किसी जानवर पर हमला करके सब एक साथ उसे खाते हैं।

4 – शैतान से होशियार रहना इससे अपने ईमान और इस्लाम की हिफाज़त करना क्योंकि शैतान वादे और उम्मीदें दिलाता और इस

धोखे में फंसा कर इस्लाम के फराईज़ अकीदा, नामज, ज़कात, इख्लास, मामलात इन बड़ी चीजों से दूर करके शिर्क, बिदअत, और कबीरा गुनाहों में मुब्तेला करने की कोशिश करता है।

5 – ऐ लोगों! याद रखो तुम्हारे ऊपर औरतो के हूकूक (RIGHTS) हैं। और औरतों के हूकूक तुम्हारे ऊपर हैं। अल्लाह ही की इजाजत से औरतें तुम्हारे निकाह में आई हैं। जो कुछ खाओं उन्हे भी खिलाओ पिलाओ उनके कपड़े और जायज जरूरतों को पूरा करो। अपनी औरतों के साथ अख्लाक और दयालुता से व्यवहार करना क्योंकि वह कमजोर और तुम्हारी मददगार हैं। और औरतें ऐसे लोगों को अपना दोस्त न बनाए और ऐसे (नामुहरिम) लोगों को घर में आने की अजाजत न दें जो उसके आदमी को पसन्द न हो तथा औरतें पर्दे और अपनी शर्मगाहों की हिफाजत करें।

6 – ऐ लोगो ! मेरी बाते ध्यान से सुनो अल्लाह की इबादत के बारे में बहुत फिक्रमंद रहना पाँच फर्ज़ नमाज़ें, रमजान के रोजे, ज़कात और अगर माल और ताकत हो तो हज जरूर करनां।

7 – सारी इन्सानियत आदम और हव्वा से पैदा की गई हैं किसी अरब को किसी गैर अरब पर कोई बढ़ोतरी (SUPERIORITY) नहीं न ही किसी गोरे को काले पर और न ही किसी काले को गोरे पर कोई फजीलत नहीं। सिर्फ तक़वा (अल्लाह का डर) और आमाले स्वालेहात (GOOD DEEDS) से इन्सान इज्जत के ऊँचें मकाम पर पहुंचता है। मुसलमान दूसरे मुसलमान के भाई हैं एक ही उम्मत हैं। तो भाई चारे के साथ मिलजुल कर रहो हलाल चीजों पर अमल करो नाइन्साफी से कोई काम न करो।

त्याग मक्का से मदीना) के 10 साल बाद अरबी तारीख 9 ज़िलहिज्जा उरैना घाटी में अरफात के मैदान में ये खुतबा दिया जो सारी इन्सानियत के लिए मशअले राह सीधा रास्ता दिखाने वाला है। मोहम्मद स.अ.व. ने फरामाया

ऐ लोगों मेरी नसीहत बहुत ध्यान से सुनो और हज के अरकान मुझ से सीख लो फिर शायद मौका न मिले और यह बातें उन लोगों तक पहुँचा देना जो यहाँ मौजूद नहीं हैं।

1 – ऐ लोगों यह महीना यह दिन यह शहर पाक (SACRED PLACE) है मुसलमान की जान और माल व इज्ज़त दूसरे मुसलमान पर हराम है। अगर कोई मुसलमान अपनी जान, माल, इज्जत की हिफाज़त करते हुए मरता है तो वह शहीद है। अमानतें उनके मालिकों तक पहुंचा देना। किसी को कोई नुक़सान या क्षति न पहुंचाना तो तुम्हें भी कोई नुकसान नहीं पहुंचाएगा।

2 – याद रखो बेशक तुम अपने रब से जरूर मुलाकात करोगे फिर वह जरूर तुम से तुम्हारे आमाल के बारे में पूछ ताथ करेगा।

3 – ब्याज (INTEREST) हराम कर दिया गया है। क्योंकि ब्याज घरों को बर्बाद करने वाला है। रहम और इन्सानियत को खत्म कर देता है। और अमीरों – गरीबो के बीच दुश्मनी के बीज बोता है। ब्याज एक ऐसा हथियार है जो अमीरों के हाथ में होता है जिससे वो गरीबों का माल हडपते हैं जैसे जंगली कुत्ते किसी जानवर पर हमला करके सब एक साथ उसे खाते हैं।

4 – शैतान से होशियार रहना इससे अपने ईमान और इस्लाम की हिफाज़त करना क्योंकि शैतान वादे और उम्मीदें दिलाता और इस

धोखे में फंसा कर इस्लाम के फराईज़ अकीदा, नामज, ज़कात, इख्लास, मामलात इन बड़ी चीजों से दूर करके शिर्क, बिदअत, और कबीरा गुनाहों में मुब्तेला करने की कोशिश करता है।

5 – ऐ लोगों! याद रखो तुम्हारे ऊपर औरतो के हूकूक (RIGHTS) हैं। और औरतों के हूकूक तुम्हारे ऊपर हैं। अल्लाह ही की इजाजत से औरतें तुम्हारे निकाह में आई हैं। जो कुछ खाओं उन्हे भी खिलाओ पिलाओ उनके कपड़े और जायज जरूरतों को पूरा करो। अपनी औरतों के साथ अख्लाक और दयालुता से व्यवहार करना क्योंकि वह कमजोर और तुम्हारी मददगार हैं। और औरतें ऐसे लोगों को अपना दोस्त न बनाए और ऐसे (नामुहरिम) लोगों को घर में आने की अजाजत न दें जो उसके आदमी को पसन्द न हो तथा औरतें पर्दे और अपनी शर्मगाहों की हिफाजत करें।

6 – ऐ लोगो ! मेरी बाते ध्यान से सुनो अल्लाह की इबादत के बारे में बहुत फिक्रमंद रहना पाँच फर्ज़ नमाज़ें, रमजान के रोजे, ज़कात और अगर माल और ताकत हो तो हज जरूर करनां।

7 – सारी इन्सानियत आदम और हव्वा से पैदा की गई हैं किसी अरब को किसी गैर अरब पर कोई बढ़ोतरी (SUPERIORITY) नहीं न ही किसी गोरे को काले पर और न ही किसी काले को गोरे पर कोई फजीलत नहीं। सिर्फ तक़वा (अल्लाह का डर) और आमाले स्वालेहात (GOOD DEEDS) से इन्सान इज्जत के ऊँचें मकाम पर पहुंचता है। मुसलमान दूसरे मुसलमान के भाई हैं एक ही उम्मत हैं। तो भाई चारे के साथ मिलजुल कर रहो हलाल चीजों पर अमल करो नाइन्साफी से कोई काम न करो।

8 – याद रखो एक दिन तुम अपने रब के सामने इकटठा किये जाओगे वहाँ आमालों का हिसाब लिया जायेगा तो होशमंद रहना मेरे दुनिया से जाने के बाद तकवा और सीधे रास्ते से अलग न होना।

9 – ऐ लोगो ! मेरे बाद कोई रसूल नहीं आने वाला और न ही कोई नया ईमान (आस्था) इसलिए ऐ लोगों मेरी बातें ध्यान से सुनो जो मैं तुम्हें बता रहा हूँ।

मैं तुम्हारे बीच दो चीजें छोड़े जा रहा हुँ कुरआन और मेरी सुन्नतें अगर तुम इन दोनों पर अमल करोगे तो कभी भी गुमराह नहीं होगे। ऐ यहाँ मौजूद लोगों मेरी बातें जो तुमने सुनीं इनको दूसरे लोगों तक पहुंचा देना जो यहाँ मौजूद नहीं। अब मैं अल्लाह को गवाह बनाता हूँ और मोहम्मद स.अ.व. ने आसमान की तरफ उंगली उठाई और कहा या अल्लाह जो दीन तूने मेरी तरफ भेजा, वो सारा का सारा मैने लोगों तक पहुँचा दिया।

(बखारी हदीस नं. 1623 – 1626– 6361, मुस्लिम 18, तिर्मिजी (सहीह) 1628 – 2046 – 2085 , मुस्नद अहमद (सहीह) 19774)

समाप्त